SAMPLE

Maha Vaastu

MindSutra Software Technologies
A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,
Uttam Nagar, New Delhi-110059

वास्तु देवता की स्तुति

ओम् वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान्,
स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व,
शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ईशान कोण की स्तुति

ईशानं वृषभारूढं त्रिशूलं व्यालधारिणम्।
शरच्चन्द्रसमाकारं त्रिनेत्रं नील कण्ठकम्।।

पूर्व दिशा की स्तुति

एरावत गजारूढं स्वर्णवर्ण किरीटिनम्।
सहस्त्रनयनं शक्रं वज्रपाणिं विभावयेत्।।

आग्नेय कोण की स्तुति

सप्तार्चिषं च बिभ्राण – मक्षमाला कमण्डलुम्।
ज्वालामालाकुलं देवं शक्ति हस्त छगासनम्।।

दक्षिण दिशा की स्तुति

कृतान्त मषिसारूढं दण्डहस्तं भयानकम्।
कालपाश धरंकृष्णं ध्यायेत्दक्षिण दिक्पतिम्।।

नैऋत्य कोण की स्तुति

रक्तंनेत्र शवारूढं नीलोत्पलदल प्रभम्।
कृपाणपाणिमात्स्त्रौघं पिबन्तं राक्षसेश्वरम्।।

पश्चिम दिशा की स्तुति

नागपाशधरं हृष्टं रक्तौघ द्युति विग्रहम्।
शशांड़क घवलं ध्यायेत् वरूण मकरासनम्।।

वायव्य कोण की स्तुति

आपीपं हरि तच्छायं विलोलध्वजधारिणम्।
प्राणभूतं च भूतानां घृणिहस्तं समीरिणम्।।

उत्तर दिशा की स्तुति

कुबेरं मनुजासीनं सगर्वं गर्वविग्रहम्।
स्वर्णच्छायं गदाहस्तं उत्तराधिपतिं स्मेरत्।।

मकान सुख प्राप्ति के लिए भगवान विश्वकर्मा की उपासना

किसी भी व्यक्ति के लिए रोटी, कपड़ा एवं मकान की व्यवस्था करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। इनमें मकान की आकांक्षा सबसे अधिक होती है और सभी इसके लिए अपने स्तर पर हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। कुछ लोग इसे पाने में सफल रहते हैं तो कुछ को मकान की प्राप्ति अंत तक नहीं होती या बहुत बिलंब से होती है। कभी–कभी मकान बनते–बनते भी अधूरा रह जाता है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में दैवी कृपा का सहारा बिगड़ते कार्यों को भी बना सकता है।

मकान निर्माण के लिए भगवान विश्वकर्मा की उपासना बहुत सहायक होती है। इनकी उपासना से आपकी आर्थिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक बाधायें दूर होती हैं एवं आपका कार्य सुचारू रूप से होगा। माघ महीने की शुक्ला पंचमी (बसंत पंचमी), माघ शुक्ला त्रयोदशी (विश्वकर्मा जयंती), श्रावण शुक्ला पूर्णिमा एवं हर मास की अमावस्या के दिन विश्वकर्मा की पूजा करने से मकान सुख में बढ़ोतरी होती है।

मकान या भूमि की प्राप्ति के लिए किसी शुभ दिन से विश्वकर्मा की पूजा शुरू करें एवं कार्य पूर्ण होने तक मंत्र जाप करते रहें। सबसे पहले विश्वकर्मा की फोटो को चौकी पर आसन बिछाकर या अपने पूजा स्थल में रखें, फिर निम्न मंत्र से जाप करें –

चिंतये विश्वकर्माणं शिवं वटतरोरधः।
दिव्य सिंहासनासीनं मुनिवृंद निसेवितम्।।
उपास्यमान ममौःस्त्रयमानं महर्षिभिः।
पंचवक्त्रं दशभुज ब्रह्मचारी ब्रतेस्थितम्।।
कुदालं करणी वास्यमि यंत्रं कमण्डलु।
विभ्राणं दक्षिणोर्हस्ते स्वरोह कर्मात्प्रभु।।
मेरूटंकं स्वनं भूषा वह्नि च दृधतं करै।
अवरोह क्रमणैव वमै शुभ विलोचनं।।

इसके तदुपरांत धूप, दीप, अगरबत्ती जलायें एवं गंध, कुमकुम, वस्त्र, माला एवं प्रसाद चढ़ायें तथा विश्वकर्मा के पांचों पुत्रों मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवज्ञ को ध्यान कर प्रणाम करें तथा अपने मकान सुख की प्राप्ति के लिए निवेदन करें।

इसके बाद निम्न मंत्र की 3 या 5 माला का जाप लगातार 6 महीने तक करें –

ओम् ऐं ह्रीं क्लीं क्रों भगवते विश्वकर्मणे मम मनोवांछित भूमि, आवास सुखं दापय दापय स्वाहा।।

या

ओम् नमः भगवते विश्वकर्मणे।।

मंत्र का 80000 जाप कर यथाशक्ति हवनादि करें।

ऐसा करने से भगवान विश्वकर्मा के आशीर्वाद से भूमि एवं मकान सुख प्राप्त होगा एवं आपके मकान में वास्तु दोष भी कम होंगे।

मकान कुण्डली

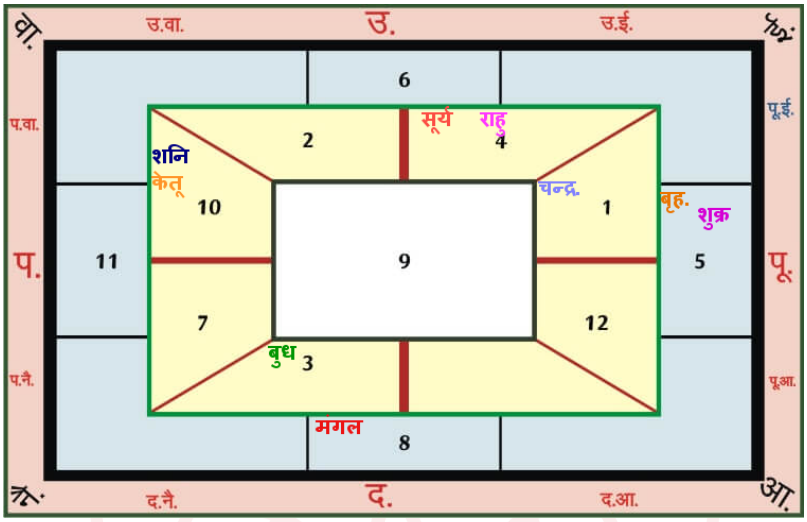

लग्न कुण्डली

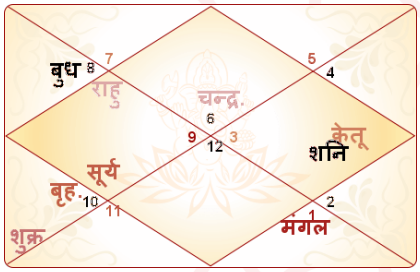

भाव चलित कुण्डली

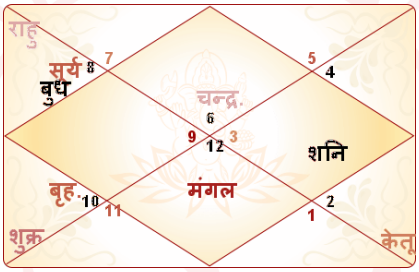

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

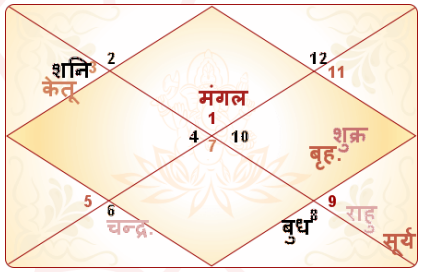

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	4	5	ग्रह			चन्द्रमा				शुभ भाव
चन्द्रमा	1	4	ग्रह			सूर्य	हाँ		हाँ	शुभ भाव
मंगल	8	1, 8	ग्रह	हाँ						अशुभ भाव
बुध	3	3, 6	ग्रह		हाँ				हाँ	अशुभ भाव
बृहस्पति	5	9, 12	ग्रह	हाँ						शुभ भाव
शुक्र	5	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	...
शनि	10	10, 11	ग्रह	हाँ	हाँ					शुभ भाव
राहु	4		राशि					हाँ		शुभ भाव
केतु	10		राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव

ग्रहों की मकान कुण्डली में स्थिति के अनुसार मकान सुख

(लग्न कुण्डली पर आधारित)

लाल किताब के अनुसार, किसी भी कुण्डली में मकान से संबंधित कार्यों में शनि का बहुत बड़ा योगदान होता है। शनि की स्थिति से जातक के मकान के बारे में बहुत सारी जानकारियां प्राप्त होती हैं। मकान कब बनेगा एवं कैसा मकान शुभ फलदायक होगा, इसके लिए कुण्डली में शनि की स्थिति देखनी बहुत जरूरी हो जाती है। कुण्डली में उपस्थित शनि अपना शुभ–अशुभ प्रभाव मकान की नींव का प्रारंभ करने के 3 या 18 वर्ष बाद अवश्य देता है।

दसवें भाव (पश्चिमी वायव्य दिशा) में स्थित शनि का फल

सबसे पहले शनि के जो फल और उपाय दिए गये हैं उन्हे समझना है और करना है। अन्य ग्रहों के फल और उपाय पर शनि को वरीयता देना है।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। आपको अपना मकान बनाने के लिए उत्तरमुखी या पूर्व–उत्तर के सामने का भूखंड लेना चाहिए। जैसा कि चौथा भाव माता से संबंधित है, आपको अपना मकान बनवाने से पहले मॉ का आर्शीवाद अवश्य लेना चाहिए तथा मकान की नींव अपनी मॉ, पत्नी यां अपनी कन्या संतान के साथ मिलकर रखें।

मकान का निर्माण कराते समय रसोई घर में भूलकर भी काले पत्थर का प्रयोग न करें। जहां तक सम्भव हो सके, सफेद पत्थर लगवायें, अन्यथा पाकशाला का संचालन करने वाली स्त्री खासकर माता एवं पत्नी का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। यदि आप अपने पैतृक मकान में रहते हैं तो उस मकान का शुभ फल प्राप्त करने के लिए तथा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए अपने मकान में यज्ञ जरूर करें एवं अपने पिता के नाम पर अंधों एवं भिखारियों के बीच निःशुल्क भोजन का वितरण करें।

अपने मकान में सूर्य से संबंधित वस्तुयें उत्तर दिशा में रखें। अपने भंडार गृह में रखे गेहूँ, गुड़ आदि को खराब न होने दें। उन्हें बचाने के लिए भूरी चीटियों को खिलायें।

आपको अपने मकान में दुकान बना कर लकड़ी या लोहे का कारोबार नहीं करना चाहिए और न ही किसी दूसरे को दुकान किराये पर देकर करवाना चाहिए।

यदि आप या आपकी पत्नी अपने मकान में दुकान बनाकर सोने, चांदी या कपड़े का व्यवसाय करते हैं तो आपको काफी शुभ फल प्राप्त होगा। कारोबार उन्नति करेगा एवं आपको काफी मात्रा में लाभ प्राप्त होगा।

आपको अपना मकान बनने के बाद अपनी माता को अपने पास रखना चाहिए एवं उनकी सेवा करनी चाहिए। इससे आपको अपनी बहन से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपके घर में पुत्र संतान जीवित नहीं बच रहा है तो अपने घर में आग की भट्टी स्थापित न करें। रात को सोते समय सफेद वस्तु, कपड़ा, दूध, शक्कर आदि सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उसे दान कर दें। किसी धर्म स्थान के कुत्ते को रोटी दें।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में है। अपने मकान में पीतल के पुराने बर्तन कायम रखें, उन्हें नहीं बेचें।

आपकी कुण्डली में शनि, राहु या केतु की स्थिति या दृष्टि के कारण सूर्य अशुभ हो रहा है। अपने मकान का पूर्वी भाग खुला रखें, भाग्य आपका साथ देगा। घर में आटा पीसने की चक्की रखें, रोजगार में बरकत होगी।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान के दक्षिणी भाग में लोहे के दरवाजे एवं खिड़कियाँ लगाने से बचाना चाहिए।
2– मकान की नींव में कभी भी सर्प स्थापित न करें।
3– आपको गृह प्रवेश के समय अपनी माता, पत्नी एवं कन्या संतानों को कपड़े एवं चांदी देना चाहिए।

मकान में चित्र, खिलौने, रंग, प्रतीक और शुभ चिन्हो की स्थापना

(लग्न कुण्डली पर आधारित)

वास्तु के अनुसार यदि भवन में कोई वास्तुदोष हो तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए शुभ चिन्हों, विभिन्न चित्रों, रंगो, खिलौनों व प्रतीकों आदि का प्रयोग भी किया जा सकता है। इन चिन्हों इत्यादि का प्रयोग घर में करने से अनेक प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं एवं सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है।

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में उगते हुए सूर्य का चित्र एवं बंदर का खिलौना रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में हाथी के चित्र, मिट्टी का हाथी एवं हाथी दांत के खिलौने रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में पालतू कुत्तों के चित्र रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में दूध वाले वृक्षों के चित्र एवं खिलौने, जलाशय के चित्र रखना शुभ होगा।

मकान के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह लगाना लाभदायक एवं उन्नतिकारक होता है। मकान के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक, कलश, बेल–बूटें एवं हाथ का चिन्ह लगाना चाहिए। ध्यान रखें कि स्वास्तिक के चित्र में चार बिन्दु अवश्य हों, अन्यथा यह अधूरा माना जाता है। मछली का चित्र, दौड़ते हुए हिरण का चित्र, घुड़सवारी या हाथी पर सवारी का चित्र एवं कछुआ का चित्र शुभ रहता है।

मकान में दर्पण लगाने के लिए सबसे उपयुक्त दिशा उत्तर एवं पूर्व होता है। पश्चिम में दर्पण लगाने से सामान्य फल प्राप्त होता है। दक्षिण दिशा में दर्पण नहीं लगाना चाहिए। वॉश बेसिन के साथ भी दर्पण लगा सकते हैं। दर्पण को इस तरह रखें कि सूर्य की किरणें परावर्तित होकर आंखों पर न पड़े।

अपने मकान में घड़ी कभी भी ईशान, दक्षिण दिशा एवं अग्निकोण में नहीं लगायें, बाकी अन्य दिशायों में लगाना शुभ होता है। ध्यान रखें कि घड़ी कभी बंद न हो। यदि घड़ी खराब हो जाये, तो उसे तुरंत बनवायें या दूसरी घड़ी लगायें।

हल, घानी (कोल्हू) गाड़ी, अरहट (रेहट कुँयें से पानी निकालने का चरखा) काँटेवाले वृक्ष तथा पाँच प्रकार के उदुंबर (गूलर, बड़, पीपल, पलाश और कढंबर) और क्षीरतरु (जिस वृक्ष को काटने से दूध निकले), वीजोरा,

केला, अनार, नींबू , आक, इमली, बबूल, बेर व पीले फूल वाले तथा पक्षियों के घोंसले वाली लकड़ी घर बनाने के काम में नहीं लेनी चाहिए।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में है। आपके लिए अपने मकान में हरियाली के चित्र या बकरी के खिलौने रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में शनि एवं राहु शुभ भाव में है। अपने मकान में हाथी के चित्र एवं खिलौने रखना लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य एवं शनि, सूर्य एवं राहु, शनि एवं चंद्रमा, मंगल एवं राहु या शनि एवं मंगल एक साथ स्थित हैं। आपको अपने मकान में प्रवेश करने के समय पहली देहली के नीचे चांदी के पत्तर या नाग–नागिन दबाना चाहिए, इससे संतान को शुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति एवं शुक्र एक साथ स्थित हैं। आपके लिए अपने मकान में रथ वाले चित्र, घोड़े का चित्र लगाना शुभ होगा।

ओम्

ओम् शब्द ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है। वेदों का शुभारम्भ भी इसी शब्द से हुआ है। इस शुभ चिन्ह् को हिन्दु धर्म में शक्ति का मूल स्रोत माना गया है। इसका प्रयोग भवनों में मंगल चिन्ह के रूप में किया जाता है। यही ब्रह्मा है। इस चिन्ह् के स्वरूप में कुछ परिवर्तन के साथ लगभग सभी धर्मों में अपनाया गया है। यह शब्द संपूर्ण ब्रह्मा, ब्रह्मांड, अपरिमित बल तथा प्रणव का प्रतीक होता है। इस शब्द को देखने व उच्चारण करने मात्र से ही मन की एकाग्रता हो जाती है तथा शांति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इस चिन्ह् को घर में उचित स्थान पर स्थापित करना शुभ फलदायक होता है।

मंगल कलश

मंगल कलश वैदिककाल से ही जलपूरित एवं आम्रपत्र, पुष्प तथा नारियल से ढँका शुभ मंगल कलश शुभता, संपन्नता तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है, क्योंकि सृष्टि का उद्भव जल से हुआ है, इसीलिए ब्रह्मांड की उत्पत्ति का जल ही प्रतीक है। सभी धर्मशास्त्रों में जल से भरे हुए कुंभ को जीवन की पूर्णता का प्रतीक माना

गया है। इसको भवन में स्थापित करने से सदैव घर की सुख–शांति बनी रहती है एवं धन–संपदा में वृद्धि होती है। इसी लिए नए घर में प्रवेश करते समय सबसे पहले जल से भरे कुंभ को स्थापित किया जाता है।

स्वास्तिक

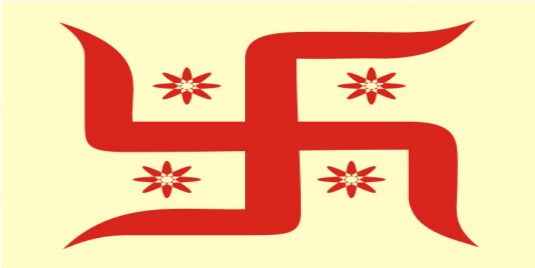

स्वास्तिक अति प्राचीन काल से ही स्वास्तिक को मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयोग किया जाता है। धार्मिक मतानुसार इस चिन्ह को जीत का प्रतीक माना जाता है। इस चिन्ह को शुभ माना जाता है और भवन के मुख्य द्वार के दोनों ओर बनाया जाता है; ताकि अनिष्टकारी दृष्टि से भवन की रक्षा होती रहे। घर में स्वास्तिक का चिन्ह स्थापित करने से पारिवारिक जनों को उनके कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

पंचागुलक हाथ

पंचागुलक हाथ मांगलिक चिन्ह पंचागुलक हाथ गृह प्रवेश पुत्रजन्म तथा विवाह के शुभ अवसर पर हल्दी व चावल की पीठी से पींठ पर लगाने की काफी पुरानी परम्परा चली आ रही है। पाँच की संख्या पाँच तत्त्वों की निरंतरता, अनश्वरता का प्रतीक है। हाथ को कर्म का प्रतीक माना गया है, यह देवताओं की अभय मुद्रा व आशीष मुद्रा का प्रतीक है। भवन में हाथ को मांगलिक चिन्ह के रूप में स्थापित करके, समृद्धि पंच महाभूतों एवं कर्म की महत्ता को प्रकट किया जाता है। बौद्ध धर्म में तो हाथ की मुद्राओं द्वारा ही विभिन्न मनोदिशाओं को संकेत रूप में बताया गया है।

मीन (मछली)

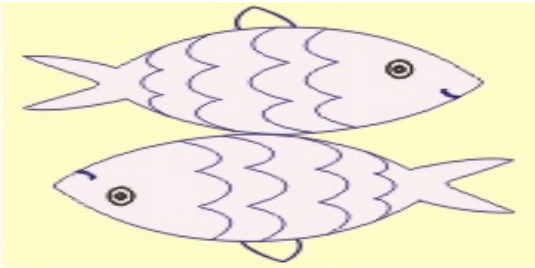

मीन (मछली) को सच्चे प्रेम की प्रतीक माना गया है। यात्रा शुरू करने से पहले मत्स्य दर्शन कार्य सफलता का सूचक व शुभ माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की प्राचीन परम्परा हैं भवन के मुख्य द्वार पर जुड़वाँ मछलियों के चित्र को बनाने की परम्परा है। इसके पीछे यही भावना जुड़ी है कि यदि मत्स्य के साक्षात् दर्शन नहीं होते, तो उसके चित्र में ही दर्शन हो जायें। इसे मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता का द्योतक है।

धार्मिक शुभ प्रतीक

ईसाइयों का शुभ प्रतीक चिन्ह क्रॉस तथा मुस्लिमों का शुभ प्रतीक अंक 786 तथा अर्द्धचन्द्र व सिक्खों का एक ओंकार है। इन मांगलिक चिन्हों को भवनों के बाहर द्वार पर लगाना चाहिए। ये शुभ तथा समृद्धि के सूचक हैं।

त्रिशूल

भगवान शंकर के प्रतीक त्रिशूल का चिन्ह् सभी प्रकार की कठिनाईयों को दूर करता है एवं सभी प्रकार की सुख–समृद्धि, धन व यश में वृद्धि करता है।

लाल रंग

लाल रंग को मंगल का कारक माना जाता है। इस शुभ चिन्ह को लकड़ी के एक चौकोर टुकड़े को लाल रंग से रंगकर अथवा उसके उपर लाल रंग का कपड़ा चढ़ाकर बनाया जाता है। इस चिन्ह् को घर में रखने से किसी

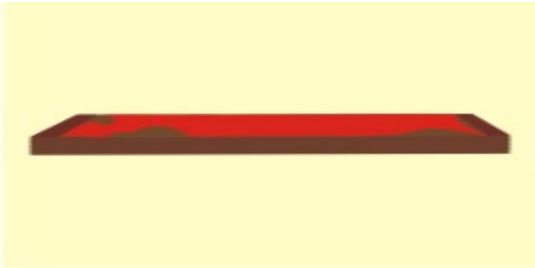

प्रकार बाहरी बाधा, बाहरी बीमारी, जादू, टोना आदि का प्रभाव घर के सदस्यों पर नहीं पड़ता है।

ग्रहों की मकान कुण्डली में स्थिति के अनुसार मकान सुख

(लग्न कुण्डली पर आधारित)

लाल किताब के अनुसार, किसी भी कुण्डली में मकान से संबंधित कार्यों में शनि का बहुत बड़ा योगदान होता है। शनि की स्थिति से जातक के मकान के बारे में बहुत सारी जानकारियां प्राप्त होती हैं। मकान कब बनेगा एवं कैसा मकान शुभ फलदायक होगा, इसके लिए कुण्डली में शनि की स्थिति देखनी बहुत जरूरी हो जाती है। कुण्डली में उपस्थित शनि अपना शुभ–अशुभ प्रभाव मकान की नींव का प्रारंभ करने के 3 या 18 वर्ष बाद अवश्य देता है।

दसवें भाव (पश्चिमी वायव्य दिशा) में स्थित शनि का फल

सबसे पहले शनि के जो फल और उपाय दिए गये हैं उन्हे समझना है और करना है। अन्य ग्रहों के फल और उपाय पर शनि को वरीयता देना है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आप जब तक मकान का निर्माण नहीं करते या बना–बनाया मकान नहीं खरीदते, तब तक आपको बहुत धन लाभ होगा। लेकिन जैसे ही आप मकान बनवाते हैं या खरीदते हैं, आपकी आमदनी रूक सकती है। आपकी आमदनी का स्रोत बाधित हो सकता है। 3 वर्षों के बाद फिर आपकी स्थिति ठीक होने लगेगी।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। शुभ फलों में बढ़ोतरी एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए तरस खाकर किसी की सहायता न करें। अपने मतलब के बगैर दूसरों की मदद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आपके लिए स्वास्तिक का निशान एवं 111 नंबर शुभ होंगे।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान निर्माण के लिए सरकारी विभागों से धन लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको अपना मकान बनाने में आपके मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

यदि आपके मकान का निर्माण बीच में ही रूक गया है, तो आपकी कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है। आपको शनि का उपाय करना चाहिए।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान का निर्माण कार्य 39वें वर्ष से प्रारंभ करें।

2– मकान निर्माण के समय से ही शनि को अशुभता से बचाने के लिए मांस, अंडे एवं शराब का सेवन न करें।

3– मकान का निर्माण कार्य कभी भी अधूरा न छोड़ें।

4– अपने मकान में गणपति की स्थापना करें एवं नित्य पूजा करें।

5– अपने मकान के आस–पास पीपल का वृक्ष लगायें एवं उसकी सेवा करें। वृक्ष इस प्रकार लगायें कि उसकी छाया मकान पर न पड़े या कम से कम पड़े।

चौथे भाव (उत्तरी ईशान दिशा) में स्थित सूर्य का फल

सूर्य को लालकिताब और वैदिक ज्योतिष में पालक कहा गया है। इसी कारण सूर्य को भी भगवान विष्णु के बराबर मान–सम्मान दिया जाता है और केवल इन्ही दोनों को नारायण कहा जाता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। आपको अपना मकान बनाने के लिए उत्तरमुखी या पूर्व–उत्तर के सामने का भूखंड लेना चाहिए। जैसा कि चौथा भाव माता से संबंधित है, आपको अपना मकान बनवाने से पहले मॉ का आर्शीवाद अवश्य लेना चाहिए तथा मकान की नींव अपनी मॉ, पत्नी यां अपनी कन्या संतान के साथ मिलकर रखें।

मकान का निर्माण कराते समय रसोई घर में भूलकर भी काले पत्थर का प्रयोग न करें। जहां तक सम्भव हो सके, सफेद पत्थर लगवायें, अन्यथा पाकशाला का संचालन करने वाली स्त्री खासकर माता एवं पत्नी का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। यदि आप अपने पैतृक मकान में रहते हैं तो उस मकान का शुभ

फल प्राप्त करने के लिए तथा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए अपने मकान में यज्ञ जरूर करें एवं अपने पिता के नाम पर अंधों एवं भिखारियों के बीच निःशुल्क भोजन का वितरण करें।

अपने मकान में सूर्य से संबंधित वस्तुयें उत्तर दिशा में रखें। अपने भंडार गृह में रखे गेहूँ, गुड़ आदि को खराब न होने दें। उन्हें बचाने के लिए भूरी चीटियों को खिलायें।

आपको अपने मकान में दुकान बना कर लकड़ी या लोहे का कारोबार नहीं करना चाहिए और न ही किसी दूसरे को दुकान किराये पर देकर करवाना चाहिए।

यदि आप या आपकी पत्नी अपने मकान में दुकान बनाकर सोने, चांदी या कपड़े का व्यवसाय करते हैं तो आपको काफी शुभ फल प्राप्त होगा। कारोबार उन्नति करेगा एवं आपको काफी मात्रा में लाभ प्राप्त होगा।

आपको अपना मकान बनने के बाद अपनी माता को अपने पास रखना चाहिए एवं उनकी सेवा करनी चाहिए। इससे आपको अपनी बहन से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपके घर में पुत्र संतान जीवित नहीं बच रहा है तो अपने घर में आग की भट्टी स्थापित न करें। रात को सोते समय सफेद वस्तु, कपड़ा, दूध, शक्कर आदि सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उसे दान कर दें। किसी धर्म स्थान के कुत्ते को रोटी दें।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में है। अपने मकान में पीतल के पुराने बर्तन कायम रखें, उन्हें नहीं बेचें।

आपकी कुण्डली में शनि, राहु या केतु की स्थिति या दृष्टि के कारण सूर्य अशुभ हो रहा है। अपने मकान का पूर्वी भाग खुला रखें, भाग्य आपका साथ देगा। घर में आटा पीसने की चक्की रखें, रोजगार में बरकत होगी।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान के दक्षिणी भाग में लोहे के दरवाजे एवं खिड़कियाँ लगाने से बचाना चाहिए।
2– मकान की नींव में कभी भी सर्प स्थापित न करें।
3– आपको गृह प्रवेश के समय अपनी माता, पत्नी एवं कन्या संतानों को कपड़े एवं चांदी देना चाहिए।

पहले भाव (पूर्वी ईशान दिशा) में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। अपने मकान में रसोई घर पूर्वी भाग में बनवायें। यदि आप अपना रसोई घर दक्षिणी भाग में बनवाते हैं, तो आपकी माता एवं परिवार की अन्य स्त्रियों के लिए यह कष्टकारी हो सकता है।

चंद्रमा माता का प्रतिनिधित्व करता है, चंद्रमा का पहले भाव में होना स्पष्ट संकेत करता है कि, आपके घर पर माता का प्रभाव एवं वर्चस्व अधिक होगा। आपको कभी भी अपने परिवार की स्त्री या अन्य स्त्रियों का भी अपने मकान के अंदर या बाहर कहीं भी अपमान नहीं करना चाहिए। अपनी रसोई में कभी भी मांस, अंडा आदि नही बनवायें और नही बाहर से लाकर खायें। आपके लिए मकान में प्राकृतिक जल के स्रोत के लिए उत्तर का स्थान उपयुक्त एवं शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। आपको अपनी 24 वर्ष की आयु से पहले मकान नहीं बनवाना चाहिए, अन्यथा आपको धन हानि हो सकती है। आपकी माता एवं संतान के स्वास्थ्य पर भी इसका अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। अशुभ फलों में कमी करने के लिए जमीन में सौंफ दबायें।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– रसोई में चन्द्रमा स्थापित करने के लिए कम से कम 20 किलो चावल रसोई में या अपने भण्डार गृह में रखें।
2– चावल को कभी भी काली दाल के साथ मिलाकर नहीं रखना चाहिए।
3– रसोई मे चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें एवं खाने में भी चांदी के बर्तनों का प्रयोग शुभ फलदायक होगा।
4– यदि मकान के निर्माण का कार्य प्रारंभ करते समय माता या पत्नी का स्वास्थ्य खराब होता है, तो भूमि में मंगल की वस्तुओं को दबायें।
5– आपको अपने मकान में वर्षा का जल एकत्र करने का समुचित प्रबंध अवश्य करना चाहिए।

आठवें भाव (दक्षिण दिशा) में स्थित मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आप मकान का निर्माण कार्य शुरू करने के बाद उसकी पूर्णता एवं मकान की लागत के बारे में नहीं सोचेंगे और हर हाल में अपना मकान बनायेंगे।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है या दूसरे भाव में चंद्रमा अथवा बृहस्पति स्थित है। आपके मकान के निर्माण में कभी कोई समस्या नहीं आएगी तथा मकान निर्माण से संबंधित आपका हर काम शुभ फलदायक होगा।

आपको अपने मकान की पूर्वी एवं दक्षिणी दीवार को काफी मजबूत एवं ऊँचा रखना चाहिए, इससे आपको शुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान की भूमि में भट्ठी का निर्माण नहीं कराना चाहिए, अन्यथा आप अपने लिए खुद समस्यायें पैदा कर सकते हैं। यदि मजबूरी वश ऐसा करना पड़े तो भट्टी से जली हुई मिट्टी निकालकर नदी में प्रवाहित करें और भट्टी में नई मिट्टी डालें।

अपने मकान के लिए भूखंड का चुनाव करते समय ध्यान रखें कि भूखंड दक्षिणमुखी न हो तथा इस पर बनने वाले मकान का मुख्य दरवाजा भी दक्षिणमुखी न हो।

मंगल के कुछ सामान्य उपाय –

रोज सफेद मंजन से दांत साफ करें। अपने मकान में दूध, शक्कर, चावल, शुद्ध चांदी स्थापित करें। जहां तक संभव हो सके, चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें। बड़गद के पेड़ की जड़ में दूध में मीठा डालकर चढ़ायें और गीली मिट्टी का तिलक करें, इससे पेट की समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि आपके मकान में आग लगने की घटनायें अक्सर हो रही हैं तो मकान की छत पर चीनी की बोरियां रखें, घोड़े के मुंह में देशी खाण्ड दें। मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर श्मशान में दबायें। मृगछाला एवं चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास या घर में रखें। अपने मकान के दक्षिणी दरवाजे पर लोहे की कील ठोकें, काले घोड़े की नाल न ठोकें। काली वस्तुओं से परहेज करें। ढाक का वृक्ष न लगायें और न ही उसका प्रयोग करें। चिड़ियों के लिए मीठी चीजें डालें। हाथी दांत की वस्तुयें अपने पास या घर में रखें। तांबा, गुड़, गेहूं, घोड़ा, सोना, चांदी आदि का संग्रह करना शुभ फलदायक होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– गले में चांदी धारण करें।

2– जिस दिन मकान का निर्माण प्रारंभ करें, उस दिन से 43 दिनों तक निरंतर कुत्तों को तंदूर में बनी मीठी रोटी दें।

3– अपने घर की स्त्रियों से कहें कि जब रोटी सेंकने वाला तवा गर्म हो जाए तो उस पर ठन्डे पानी की छींटें मारने के बाद रोटी सेंकना शुरू करें, इससे मंगल की अशुभता के कारण होने वाले रोगों से छुटकारा प्राप्त होगी।

तीसरे भाव (दक्षिणी नैऋत्य दिशा) में स्थित बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान की नींव में फिटकरी का पिसा हुआ चूर्ण जितना अधिक हो सके डलवायें और रंग–रोगन में भी उसका प्रयोग करें, अति उत्तम फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा में नहीं रखना चाहिए, अन्यथा आपकी पत्नी के सुख में बाधा उत्पन्न हो सकता है। आपके ससुराल वालों को भी कष्ट होगा, उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा आपका अपने ससुराल वालों के साथ संबंधों में खटास आ सकती है।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान में केवल फिटकरी से ही दांत साफ करना चाहिए।

2– मकान में लगे पत्थर को दूध से प्रति दिन धोयें, यानि कि संकेत मात्र के लिए, मकान धोते समय पानी में थोड़ा सा दूध अवश्य डालें।

3– मकान की छत पर पक्षियों के लिए उपयुक्त स्थान बनाकर उनके दाना–पानी की व्यवस्था करें।

4– मकान के पूर्व दिशा में गणपति की मूर्ति लगायें।

5– जहां तक संभव हो सके, अपने मकान में मूंग आदि का सेवन न करें, अन्यथा रोगी होने की सम्भावना रहेगी।

6– ढाक के चौड़े पत्ते दूध में धोकर मकान से बाहर सुनसान स्थान पर दिन के समय एक गड्ढे में डाल कर उस पर एक पत्थर का टुकड़ा रख कर मिट्टी डाल दें। यह अवश्य ध्यान रखें कि जिस वस्तु या औजार से गड्ढा खोदा गया है उसे वापस लेकर नहीं आना है।

7– मकान निर्माण के दिन से लगातार 43 दिनों तक बिना नागा किये रात में मूंग को फिटकरी के नमकीन पानी मे भिगो कर प्रातः जानवरों को डालें, इससे आपके मकान में सुख–समृद्धि बनी रहेगी।

पांचवें भाव (पूर्व दिशा) में स्थित बृहस्पति का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। आपको अपने पैतृक मकान या स्वनिर्मित मकान का सुख अवश्य प्राप्त होगा। कुछ संभावना है कि आपको सरकार के द्वारा निर्मित मकान का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

आपको अपने मकान के लिए भूखंड लेते समय ध्यान देना चाहिए कि भूखंड में कोई वृक्ष न हो। वृक्ष को काटने से बचें, भले ही उसके लिए किसी भूखंड का त्याग ही करना पड़े। यदि भूखंड पर कोई पीपल या बरगद का पौधा है तो उसे निकलवा कर मंदिर में लगा दें एवं उसकी सेवा करें।

आप कुछ क्रोधी स्वभाव वाले हो सकते हैं। अपने मकान के निर्माण के समय अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें एवं किसी को अपशब्द न कहें, अन्यथा मजदूरों की नाराजगी का असर आपके मकान पर दिख सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान के बाहर पीपल का वृक्ष लगाना चाहिए एवं उसकी सेवा करनी चाहिए, काफी शुभ फल प्राप्त होगा। वृक्ष इस प्रकार लगायें कि मकान के वृक्ष का वेध न हो।

आपको अपने मकान के अंदर निश्चित रूप से गणपति की स्थापना करनी चाहिए तथा नित्य उनकी पूजा करनी चाहिए।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। आप सेना में कोई वरिष्ठ अधिकारी हो सकते हैं, जिससे आपको सरकारी मकान का सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में केतु अशुभ भाव में है। आपको अपने मकान में संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यदि आपकी कोई संतान बाहर पैदा होती है और फिर अपने मकान में आती है तो उसका स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– धर्म के नाम पर धन लेकर उसका प्रयोग मकान के निर्माण में भूल कर भी न करें।

2– अपने मकान में गणपति की स्थापना करें और नित्य उनकी उपासना करें।

3– केतु को अशुभ न होने दें और उसके उपाय अपने मकान में करते रहें।

4– घर की वायु को अशुभ न होने दें। मांस, शराब एवं अंडे मकान में न बनायें और न ही सेवन करें।

पांचवें भाव (पूर्व दिशा) में स्थित शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। आपका मकान आध्यात्म का केन्द्र होगा तथा आपके परिवार के लोग धर्म का अनुपालन करने वाले होंगे।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान में अपनी माता एवं गऊ की सेवा करनी चाहिए।

2– अपने मन में अपने परिवार एवं मकान में रहने वाली किसी भी स्त्री के प्रति कोई अपवित्र विचार न रखें।

3– आपको अपने मकान के मुख्य द्वार को दूध–दही से धोना चाहिए, शुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।

4– चंद्रमा की वस्तुओं और चांदी को हमेशा अपने मकान में स्थापित रखें, काफी शुभ फल प्राप्त होंगे।

चौथे भाव (उत्तरी ईशान दिशा) में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आपके मकान में कुछ–न–कुछ हट कर होगा, जिससे आपका मकान दूसरों के मकान से कुछ विचित्र प्रतीत होगा। आपको अपने पैतृक मकान का भी पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आपको अपने द्वारा निर्मित मकान को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए या अपने मकान के मरम्मत का कार्य अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए, अन्यथा आपको धन हानि होगी एवं माता को भी कष्ट होगा।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। अपने मकान में कोयले की बोरियों का अंबार न लगायें, अशुभ फल प्राप्त होगा। अपने मकान में चंद्रमा की वस्तुयें रखना शुभ फलदायक होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में चांदी की वस्तुओं का प्रयोग एवं उपयोग करें।
2– मकान निर्माण का कार्य पूरा करायें या मरम्मत भी करायें तो पूरा करायें, अधूरा न छोड़ें।

दसवें भाव (पश्चिमी वायव्य दिशा) में स्थित केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु दसवें भाव में स्थित है। आप काफी स्वाभिमानी होंगे एवं सहायता के लिए किसी के सामने न तो हाथ फैलायेंगे और न ही किसी के आगे झुकेंगे। अपना मकान निर्माण कराने से पहले या भूखंड लेने से पहले किसी को इसके बारे में बताने में आपको विश्वास नहीं होगा।

अपने मकान के निर्माण के समय से ही शनि को शुभ करने हेतु शनि के उपाय अवश्य करें, जिससे केतु का भी आपको शुभ प्रभाव प्राप्त हो।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में चांदी के बर्तन में शहद भरकर रखें।
2– मकान की नींव में दूध एवं शहद अवश्य दबवायें।

3– 48 वर्ष की आयु होने पर अपने मकान में कुत्ता अवश्य पालें।

4– बृहस्पति और चन्द्रमा के उपाय मददगार साबित होंगे।

लाल किताब में मकान संबंधित महत्वपूर्ण नियम एवं सावधानियाँ

मकान निर्माण से पहले भूखंड के टुकड़े के कोने गिनना जरूरी होता है। चार कोने का मकान, जिसका हर कोना 90 डिग्री का हो, सबसे उत्तम होता है।

3 कोने, 13 कोने, 8 कोने एवं 18 कोने का मकान कभी नहीं बनवाना चाहिए, अशुभ फल प्राप्त होगा। वैसे भूखंड, जिसके बीच में मछली के पेट की तरह उठा हुआ हो या पांच कोने वाला मकान भी अहितकर होता है।

8 कोने वाले मकान में हमेशा बीमारी का साथ रहता है। लाख चाहने के बावजूद बीमारियों से छुटकारा पाना मुश्किल होता है तथा इस मद में खर्चे भी बहुत होते हैं। परिवार में किसी को मृत्युतुल्य कष्ट भी हो सकता है।

18 कोने वाले मकान में धन–दौलत की बरकत नहीं होती है। सोने–चांदी की हानि होगी या घर का सोना–चांदी गुम हो सकता है।

3 या 13 कोने वाले मकान में अपने भाई–बंधुओं के साथ मधुर संबंध नहीं रहेगा। अपने भाई–बंधुओं से अक्सर झगड़ा होगा या उनके कारण हानि होगी। मकान में अक्सर आग लगने की घटनायें होती रहेंगी, जिससे आर्थिक नुकसान होगा। परिवार में किसी की असमय मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट का भय हमेशा बना रहेगा।

5 कोने वाले मकान में संतान को कष्ट होगा। उनकी शिक्षा अधूरी रह सकती है। संतान के नालायक होने की संभावना अधिक होगी, जिससे उनकी बर्बादी निश्चित होगी।

यदि भूखंड बीच से मछली के पेट की तरह बाहर निकला हुआ है तो वंश वृद्धि की समस्या होगी। मकान का मालिक निःसंतान होगा। मकान मालिक अपने परिवार में अकेला भाई होगा।

बिना भुजा वाले भूखंड पर मकान बनाकर रहने से मकान मालिक को अनगिनत दुःखों का सामना करना पड़ेगा। परिवार में एक से अधिक अकाल मृत्यु देखने को मिलेगा। ऐसे मकान में विधवा या विधुर लोगों की संख्या अधिक हो सकती है।

मकान का निर्माण कार्य प्रारम्भ करने से पहले भूमि पूजन करवाएं एवं मकान निर्माण के पश्चात् उसमें निवास करने के लिए प्रवेश करते समय भी शुभ मुहूर्त में ही प्रवेश करें। मकान के पूर्व एवं उत्तर दिशा की ओर अधिकाधिक खाली स्थान छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। निर्मित मकान के चारों ओर खाली जगह छोड़ना चाहिए एवं उसके चारों ओर चारदीवारी भी अवश्य बनानी चाहिए। मकान हेतु ऐसे ही भूखण्ड का चयन करना चाहिए, जिनका दिशाकरण मुख्य दिशाओं पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण की ओर हो। मकान का मुख्य प्रवेश द्वार

सदैव मकान के अन्य द्वारों से बड़ा रखना चाहिए। यदि संभव हो तो मुख्य प्रवेश द्वार पर दो पल्लों वाला दरवाजा ही लगवाना चाहिए। मुख्य प्रवेश द्वार का निर्माण वास्तुचक्र के अनुसार शुभ पदों में करना शुभ फलदायक होता है।

मकान के मध्य स्थान में किसी प्रकार बीम, सीढ़ी, कुंआ आदि न बनवाएं। इस स्थान को सदैव भार मुक्त रखने का प्रयास करें। सामान्यतः मकान के मध्य में आंगन का बनाना सर्वाधिक उत्तम माना जाता है। आंगन का ढाल पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर रखना चाहिए। मकान के नैऋत्य कोण की ओर किसी प्रकार का कोई खुला स्थान नहीं छोड़ना चाहिए और न ही इस कोण में मुख्य द्वार अथवा चारदीवारी का द्वार रखना चाहिए। मकान के साथ यदि पीपल का पेड़ हो तो उसका साया जहां तक जाएगा, वहां तक तबाही याबर्बादी होगी। अशुभ प्रभाव से बचने के लिए पीपल की जड़ों में जल डालें, लेकिन जब भी सम्भव हो सके, मकान अवश्य बदलें। यदि आपके मकान पर किसी धर्म–स्थान आदि की छाया पड़ती हो, तो बीमारी से धन हानि होने की अधिक संभावना होगी।

यदि मकान कब्रिस्तान या श्मशान भूमि पर या कब्रिस्तान या श्मशान भूमि के आस–पास बना हो तो निःसंतान होने की संभावना अधिक है या परिवार के सदस्यों को रोग से छुटकारा पाना मुश्किल होगा। अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए अपने मकान के उत्तर या पश्चिम में कुआं या हैण्डपम्प लगवाएं। यदि मकान के पास कुआं है तो उसमें रोज दूध डालने से धन–सम्पत्ति में वृद्धि होगी, लेकिन उसमें कूड़ा डालना बर्बादी को न्योता देना होगा।

मकान में उपयोग किए जाने वाले दर्पण को पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर की दीवार पर लगाना चाहिए। मकान के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने किसी प्रकार का कोई वेध नहीं होना चाहिए। जब भी कोई शुभ कार्य करें, तो अपना मुख पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर करके बैठना चाहिए। मकान में कभी टूटे हुए दर्पण, बंद पड़ी अथवा टूटी हुई घड़ियां नहीं रखनी चाहिए। किसी भी प्रकार का कांटेदार एवं दूध वाला पौधा मकान के अन्दर नहीं लगाना चाहिए।

मकान में अनुपयोगी एवं बेकार की वस्तुओं को एकत्र करके नहीं रखना चाहिए। पुराने कपड़े, कबाड़, अखबार आदि को समय–समय पर निकालते रहना चाहिए। कुछ समय अन्तराल पर उपयोग में आने वाली वस्तुओं आदि को सुव्यस्थित करके उचित स्थान पर रखना चाहिए, जिससे घर साफ–सुथराएवं व्यवस्थित रहे। इस बात का ध्यान रखें कि बीम के नीचे बैठकर कोई कार्य न करें और न ही उसके नीचे सोएं या बैठें। मकान में किसी भी प्रकार की हिंसात्मक, भयावह, उदासीन, मृत्यु अथवा रोगी प्रकृति के चित्रों आदि को नहीं लगाना चाहिए। ऐसे चित्रों से व्यक्ति में नकारात्मक विचारधारा उत्पन्न होती है।

यदि आपके मकान की चारदीवारी के अंदर या आस–पास कीकर का पेड़ हो तो आप निःसंतान होंगे या भविष्य में आपके या आपके बच्चों की सेहत एवं शिक्षा में बाधा उत्पन्न होगी। उपाय के तौर पर लगातार 43 दिनों तक रात को पानी सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उठकर उसे किसी वृक्ष की जड़ में डालें।

मकान के अन्दर प्रवेश करते समय ही यदि जमीन के अन्दर खोदकर बनाई गई ऐसी कोई भट्टी हो जिसे केवल विवाह आदि के समय ही उपयोग में लाने के लिए खोला जाता हो एवं बाद में बंद कर दिया जाता हो, तो जब भी आपके घर लड़का पैदा होगा तो वह आपके धन–दौलत के लिए अशुभ होगा। उसके रक्त संबन्धियों का विनाश प्रारम्भ हो जाएगा एवं सबकुछ इस भट्टी की आग में जलकर नष्ट होने लगेगा। इसलिए ऐसी भट्टी को घर में कदापि नहीं रखना चाहिए। उपाय के तौर पर मिट्टी को खोद कर उसमें से जली मिट्टी निकाल कर उसको नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें और उसको नयी मिट्टी से भर दें।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, मकान में मूर्तियों को स्थापित करना शुभ नहीं होता है। सामान्यतः मूर्तियों का स्थान किसी मंदिर में होता है, क्योंकि मंदिर एक ऐसा स्थान होता है जहां एक निश्चित समय के लिए पूजा–अर्चना आदि के लिए द्वार खुलता है, अन्यथा उसे बन्द रखा जाता है, क्योंकि मंदिर जीवित वस्तुओं का कारक नहीं होता है। जबकि मकान में सदैव सजीव वातावरण होता है एवं शोर–गुल आदि होता रहता है। जिससे मकान में बनाये गये मंदिर की शांति सदैव बाधित होती रहती है। इसके अतिरिक्त, मकान में मंदिर के होने के अलावा शौचालय आदि भी आस–पास ही होते हैं, जिससे मंदिर की पवित्रता पर असर पड़ता है। इसलिए मकान में मूर्तियों की स्थापना नहीं करनी चाहिए। मूर्तियों के स्थान पर तस्वीरों को रखना चाहिए। कागज पर बने चित्रों या तस्वीरों के समक्ष ध्यान करना वर्जित नहीं है, लेकिन पूजा करते समय घंटी–घड़ियाल, शंख आदि का प्रयोग न करें। यदि मकान में मूर्तियां स्थापित कर उसकी पूजा करेंगे तो संतान उत्पन्न होने में समस्या आएगी तथा भविष्य में आपके बच्चों की शिक्षा में भी व्यवधान होगा। आप मानसिक रूप से अशांत रहेंगे।

मकान में प्रवेश करने पर दाहिने हाथ की ओर मकान के आखिरी छोर पर जहां मकान समाप्त हो रहा हो, वहां पर यदि कोई अंधेरा कमरा हो जिसमें प्रवेश करने के लिए दरवाजे के अतिरिक्त कोई और रोशनदान अथवा खिड़की न हो, जिससे की हवा या प्रकाश का आवागमन होता हो, ऐसा कमरा शनि का कारक कमरा होता है एवं यह शुभ शनि के स्थापित होने का प्रतीक होता है। इससे परिवारजनों की आयु आदि पर शुभ प्रभाव पड़ता है। इसलिए, ऐसे कमरे में रोशनी अथवा हवा के आवागमन के लिए कोई खिड़की अथवा रोशनदान नहीं बनाना चाहिए अथवा बिजली के द्वारा भी ऐसा इंतजाम नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपके धन–संपत्ति के साथ–साथ वंश भी नष्ट हो सकता है। इससे गृहस्थ जीवन में कटुता आएगी तथा अपने पड़ोसियों एवं रिश्तेदारों के साथ संबंधों में खटास आ सकती है।

यदि कभी किसी कारणवश इस कमरे की छत बदलनी पड़े, तो छत को गिराने से पहले उसके उपर छत बनवा लेना चाहिए, इससे किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। ऐसे कमरे अपने–आप नहीं गिरते, तोड़ने पर ही गिरेगा। क्योंकि शनि को अंधेरा प्रिय होता है, इसलिए यदि इस कक्ष के अंधेरे को खत्म किया जाएगा तो यह परिवारजनों के लिए अत्यंत अशुभ साबित होगा।

सामान्यतः घरों में बहुमूल्य वस्तुओं जैसे रुपए–पैसे, गहने आदि रखने के लिए या तो किसी गुप्त स्थान पर गड्ढा बनाकर रखा जाता है अथवा आलमारी के लॉकर या तिजोरी आदि में रखा जाता है। यदि इन कीमती वस्तुओं के रखने वाले स्थान को खाली छोड़ दिया जाएगा तो घर की स्थिति भी खोखली होने लगेगी। गृहस्वामी की बातों में बस उपरी दिखावा ही रहेगा, उसमें वास्तव में कुछ नहीं होगा। इसलिए इन स्थानों को कभी खाली नहीं छोड़ना चाहिए। यदि तिजोरी में धन, गहना आदि न रखा हुआ तो कोई मीठी चीज अथवा बादाम–छुहारे रख देना चाहिए। ऐसा करने से आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी एवं शुभता में वृद्धि होगी। ध्यान रखें कि इन बादाम–छुआरे को खाना नहीं है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, जिस मकान के फर्श में कहीं भी कच्चा भाग नहीं होता है, तो उस मकान में शुक्र का निवास नहीं माना जाता है, जिससे उस मकान की स्त्रियों के स्वास्थ्य के साथ–साथ आर्थिक स्थिति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। उपरी तौर पर मजबूत दिखने के बावजूद आंतरिक रूप से स्थिति कमजोर ही रहेगी। इसलिए मकान में शुक्र को स्थापित करने के लिए शुक्र की कारक वस्तुओं को स्थापित करना चाहिए। जैसे मनीप्लांट का पौधा अथवा आलू का पौधा लगाना चाहिए या गाय पालनी चाहिए, इससे स्थिति सबके अनुकूल हो जाएगी। सुखी गृहस्थ जीवन एवं आर्थिक समृद्धि के लिए अपने मकान में कच्चा स्थान अवश्य छोड़ें, अन्यथा आपके परिवार की स्त्रियों का स्वास्थ्य चिंताजनक रहेगा तथा धन–सम्पत्ति की भी हानि होगी। यदि कच्चा स्थान नहीं छोड़ा गया या नहीं छोड़ा जा सकता, तो उपाय के तौर पर सफेद सूती रूमाल में थोड़ा सा देसी घी, 7 कपूर की टिकिया और थोड़ी सी रूई बांध कर मकान में कहीं साफ एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में हो एवं व्यक्ति की जन्मकुण्डली में मंगल शुभ न हो तो ऐसा मकान व्यक्ति के लिए अत्यन्त अशुभ साबित होगा। ऐसे आवास में उसे किसी प्रकार का कोई सुख प्राप्त नहीं होगा, विशेषकर स्त्रियों के लिए ऐसा मकान अधिक अशुभ होगा। इसलिए इस दिशा से हटाकर द्वार को किसी अन्य दिशा की ओर स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। यदि ऐसा कर पाना संभव न हो तो एक लाल मुंह वाला मिट्टी का बन्दर द्वार से प्रवेश करने पर अन्दर की ओर रख देना चाहिए, जो कि मुख्य द्वार की ओर देखता रहे। चूंकि लाल मुंह वाले बंदर को सूर्य का कारक माना जाता है, इस बंदर को मकान में स्थापित करने से सूर्य की स्थापना हो जाती है, जिससे मंगल के कारक दक्षिण दिशा को शुभ शक्ति प्राप्त होती है और इसकी अशुभता में कमी आती है।

दक्षिण की ओर मुख्य द्वार होने पर मंगल बली होकर शनि के साथ और अधिक प्रचण्ड भाव से शत्रुता दर्शाता है। इसके लिए घर की दहलीज के नीचे एक चांदी की चपटी तार दबा देनी चाहिए। चांदी की तार चौड़ाई में चाहे जिस आकार का हो, परन्तु उसकी लम्बाई दहलीज के बराबर ही होनी चाहिए। ऐसा करना परिवारजनों के लिए शुभ होगा।

लाल—किताब वास्तु के अनुसार मकान में विभिन्न कक्षों की स्थिति के लिए सुझाव

लाल—किताब वास्तु के अनुसार मुख्य द्वार के लिए सुझाव

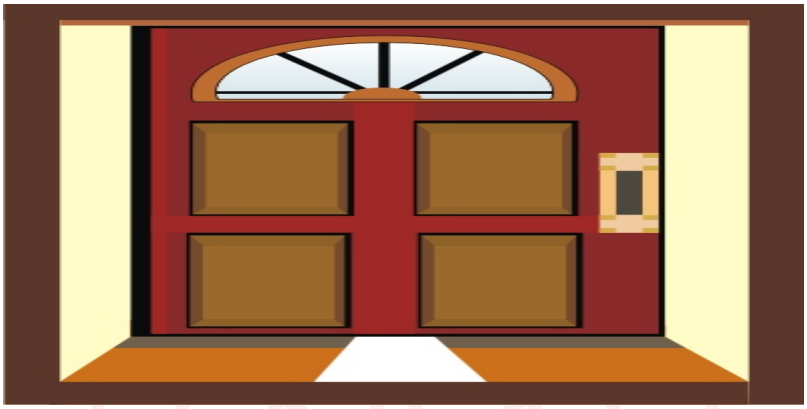

मकान के मुख्य द्वार का निर्माण सदैव वास्तु के अनुसार बताए गए शुभ पदों में ही करना शुभ होता है। मुख्य द्वार को स्थापित करते समय इस बात का ध्यान रखें कि वह कभी भी भूखण्ड के बढ़े हुए अथवा कटे हुए भाग में ना हो। आवसीय अथवा व्यावसायिक किसी भी मकान के मध्य में मुख्य द्वार नहीं बनाना चाहिए। इस प्रकार के द्वार की स्थापना धार्मिक स्थलों के लिए ही अनुकूल होता है। मकान के मध्य में मुख्य द्वार बनाने से परिवार का नाश हो जाता है। मुख्य द्वार का निर्माण इस प्रकार करवाना चाहिए कि वह सदैव मकान के भीतर की ओर ही खुले एवं मुख्य द्वार मकान में बने अन्य द्वारों की तुलना में अधिक सुन्दर, भव्य व बड़ा होना चाहिए। साथ ही मुख्य द्वार में दहलीज अवश्य ब नाना चाहिए। मुख्य द्वार स्थापित करते समय यह ध्यान देना चाहिए कि मकान के पूर्व व पश्चिम तथा उत्तर व दक्षिण दोनों दिशा में द्वार आमने–सामने नहीं होना चाहिए। मकान के मुख्य द्वार को कभी भी सड़क, गली अथवा किसी भी प्रकार के वेध के ठीक सामने स्थापित नहीं करना चाहिए। वेध से हटाकर मुख्य द्वार की स्थापना करना ही शुभ रहेगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार द्वार की लम्बाई व चौड़ाई का सर्वमान्य व उत्तम अनुपात 1:2 का माना जाता है। आवश्यकतानुसार बढ़ाया जा सकता है परन्तु यह 1:3 से अधिक नहीं होना चाहिए। व्यावसायिक स्थलों के लिए अर्थात दुकान व कार्यालय आदि के लिए यह अनुपात मान्य नहीं है।

आवासीय मकानों में द्वार की संख्या सम होनी चाहिए जैसे 2, 4, 6 व 8। परन्तु यह संख्या शून्य में नहीं होनी चाहिए जैसे 10, 20, 30 आदि। मुख्य द्वार की स्थापना सदैव वास्तु के अनुसार शुभ मुहुर्त में ही करना चाहिए। मुख्य द्वार यदि लकड़ी का बनाना हो तो सदैव ऐसी लकड़ी का प्रयोग करना चाहिए कि उसके दरवाजे कभी भी बाद में जाकर सिकुड़ने अथवा झुकने ना पाएं। यदि नए मकान का निर्माण हो रहा हो तो उसमें किसी प्रकार के पुराने दरवाजे का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मुख्य द्वार की देखभाल, रंग–रोगन आदि समय–समय पर करते रहना चाहिए एवं इसकी सजावट का ध्यान रखना चाहिए।

इस बात का सदैव ध्यान रखें कि मकान का कोई भी दरवाजा खुलते अथवा बंद होते समय किसी प्रकार की ध्वनि ना उत्पन्न करे। इसके लिए इनके कब्जों में तेल आदि लगाते रहना चाहिए। दरवाजों द्वारा ध्वनि उत्पन्न करना अशुभ माना जाता है। मकान के मुख्य द्वार को सदैव साफ, सुन्दर व सुसज्जित रखना चाहिए। इस पर ओम्, स्वास्तिक चिन्ह्, कुलदेवता का चित्र, गज लक्ष्मी का चित्र, तोरण आदि बनाना चाहिए। मुख्य द्वार कभी भी किसी प्रकार से मुड़ा हुआ, झुका हुआ अथवा टूटा हुआ होने पर मकान की अशुभता में वृद्धि होती है। मकान के पिछले द्वार का निर्माण घर में बने अन्य द्वारों की तुलना में छोटा रखना चाहिए।

यदि मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर स्थित हो तो वास्तुशास्त्र में इसे सर्वाधिक शुभ फलदायक माना गया है। इसीलिए इसे शुभता की दृष्टि से प्रथम स्थान प्राप्त है। पूर्व की ओर मुख्य द्वार वाले आवास में सभी प्रकार के सुख व समृद्धि आती है एवं ऐसे आवास में सदैव अच्छ आदमियों का आना–जाना लगा रहता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार पश्चिम की ओर मुख्य द्वार का होना भी शुभ फलदायक होता है। शुभता की दृष्टि से पश्चिमी मुख्य द्वार को पूर्वी मुख्य द्वार के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। पश्चिम दिशा का कारक शनि है एवं शनि मशीनों व लोहे आदि से संबंधित कार्यों का कारक भी है। इसलिए पश्चिम की ओर मुख्य द्वार वाला मकान इंजीनियर, हाथों से कारीगिरी करने वाले अथवा मशीनों से संबंधित कार्य करने वालों के लिए अधिक शुभ परिणाम देने वाला साबित होता है।

यदि मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा की ओर हो तो वास्तुशास्त्र में इसे भी शुभ माना जाता है। उत्तराभिमुख द्वार का संबंध व्यक्ति की उदारता व परोपकारिता से होता है। उत्तर की ओर दरवाजे वाले मकान में रहने वाले लोगों के द्वारा किए गए धार्मिक कार्य, पूजा–पाठ, लम्बी यात्रा अथवा किसी प्रकार के शुभ कार्य इनके लिए अधिक शुभ फलदायक होते हैं। ऐसा मकान आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी अनुकूल होता है।

दक्षिण दिशा की ओर मकान का मुख्य द्वार होना शुभ नहीं माना जाता है। दक्षिण की ओर मुख्य द्वार वाले मकान में रहने वाले लोगों को अथवा मकान स्वामी को बकरी का दान अथवा बुध की वस्तुओं का दान जैसे मूंग की दाल आदि का दान करते रहना चाहिए। ऐसा करने से मकान में होने वाली बीमारी, अनावश्यक विवाद या विवादपूर्ण परिस्थितियों से होने वाले मृत्यु तुल्य कष्टो आदि से सुरक्षा होती है। ऐसा माना जाता है कि दक्षिणी द्वार अपनी अशुभता का सम्पूर्ण प्रभाव तब देता है जब उस आवास में कोई राहु आठ वाला बच्चा जन्म लेता है।

मकान में मुख्य द्वार के लिए उपयुक्त स्थान

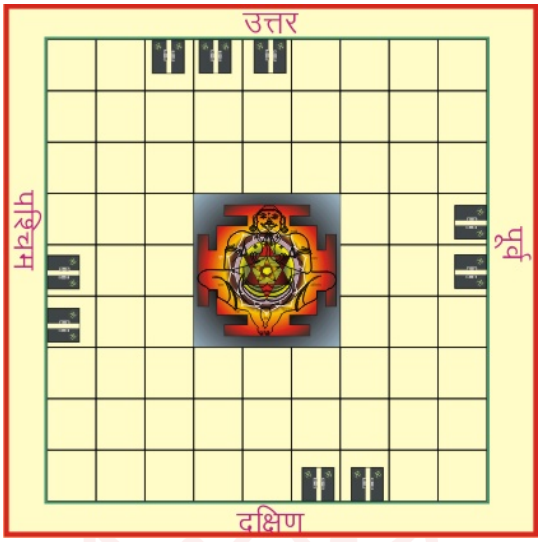

लाल—किताब वास्तु के अनुसार पूजाघर के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, पूजा एवं प्रार्थना के लिए सर्वोत्तम स्थान ईशान कोण को माना जाता है, परन्तु आवश्यकतानुसार भवन के पूर्व या उत्तर दिशा में भी पूजा घर बनाया जा सकता है, लेकिन दक्षिण दिशा में पूजा घर का निर्माण नहीं करना चाहिए। चूंकि अध्ययन कक्ष में पूजा घर बनाया जा सकता है, परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसमें संयुक्त शौचालय की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए। पूजाघर की व्यवस्था शयन कक्ष में भी नहीं होनी चाहिए। पूजा घर में देवी एवं देवताओं की मूर्तियों या चित्रों को लकड़ी की चौकी अथवा सिंहासन के उपर स्थापित करना चाहिए। पूजा घर के कमरे का फर्श अन्य कमरों से उंचा नहीं होना चाहिए एवं पूजा घर में अनुपयोगी एवं अनावश्यक सामान नहीं रखना चाहिए।

पूजाघर में स्थापित देवी–देवताओं की मूर्तियों अथवा चित्रों का मुख उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए।

किसी भी जीवित अथवा मृत व्यक्ति का चित्र भले ही वह आपका अत्यंत प्रिय या निकटतम् क्यों ना हो, पूजा स्थल में नहीं रखना चाहिए। इस प्रकार के चित्रों को पूजा घर अथवा घर के किसी भी कमरे में दक्षिणी दीवार पर लगाया जा सकता है।

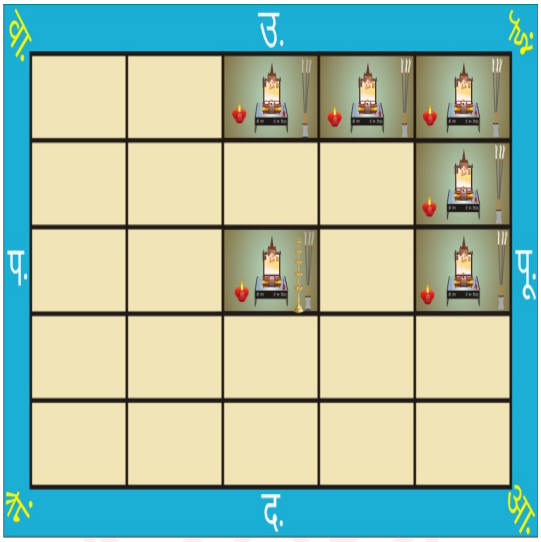

मकान में पूजाघर के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार रसोई घर के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, रसोईघर का निर्माण सदैव अग्निकोण में ही करना चाहिए। अग्निकोण में पूर्व दिशा की ओर मुख करके भोजन बनाने पर भोजन की गुणवत्ता में किसी भी अन्य दिशा की अपेक्षा अधिक सात्विकता आती है। इसलिए रसोईघर में चूल्हे अथवा गैस के लिए स्लैब का निर्माण पूर्वी दीवार में करना चाहिए एवं चूल्हे को अग्निकोण की ओर ही रखना चाहिए। यदि किसी कारणवश अग्निकोण में रसोईघर बनाना संभव न हो तो पूर्व अथवा वायव्य कोण में रसोई बनाई जा सकती है, परन्तु नैऋत्य, ईशान एवं मध्य में रसोई घर का होना अशुभ परिणाम प्रदान करता है। प्रतिकूल जगहों पर गैस चूल्हा रखने से परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अक्सर ठीक नहीं रहेगा तथा खाना पकाने वाली स्त्री अक्सर तनाव में रहेगी।

अपने दायें हाथ की तरफ मसाले के डिब्बे तथा बायें तरफ बर्तन धोने की व्यवस्था करें। रसोई घर का निर्माण शौचालय, स्नानघर, पूजाघर अथवा शयन कक्ष के उपर भी नहीं करना चाहिए। पाकशाला में पानी से संबंधित वस्तुओं जैसे नल, वाश–बेसिन, पानी का भण्डारण आदि सभी ईशान कोण की ओर करना चाहिए। बिजली से संबंधित उपकरण या मेन स्विच आदि को अग्निकोण की ओर रखना चाहिए एवं फ्रिज को पश्चिम दिशा में रखना चाहिए।रसोई घर में अनावश्यक सामान न रखें।

दक्षिण दिशा की रसोई में पके खाने का स्वाद कुछ तीखा, उत्तर दिशा की रसोई में पके खाने का स्वाद मीठा तथा उत्तर–पश्चिम की रसोई में पके खाने का स्वाद फीका होगा। पूर्व दिशा की रसोई में पके खाना खाने से रक्तचाप एवं मधुमेह बीमारी होने की संभावना होगी। ईशान कोण में रसोई होने से भूख कम लगेगी तथा भोजन का स्वाद कड़वा लगता है।

मकान के रसोई घर में एक ही चबूतरे पर गैस का चूल्हा और बर्तन धोने का सिंक नहीं होना चाहिए, इससे आपके परिवार में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों जगहों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें। रसोई घर में फर्श और दीवारों का रंग आपके मनचाहे रंगों के अनुसार हो सकता, लेकिन जहाँ तक हो सके यह काला या सफेद नहीं होना चाहिए।

मकान में घर (किचेन) के लिए उपयुक्त स्थान

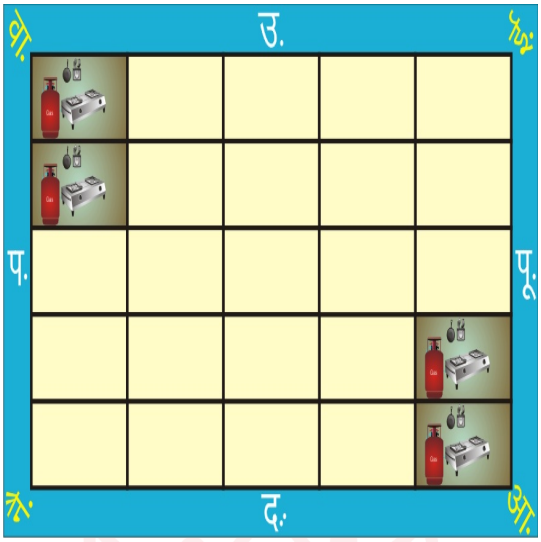

लाल—किताब वास्तु के अनुसार शयनकक्ष के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, परिवार के सदस्यों के अनुसार शयनकक्ष का निमार्ण करना चाहिए। घर के मुखिया के लिए शयनकक्ष दक्षिण दिशा में बनाना चाहिए एवं नवविवाहिता या युवा दम्पति का शयनकक्ष वायव्य एवं उत्तर दिशा के मध्य में बनाना चाहिए। घर में आने वाले अतिथियों के लिए शयन कक्ष का निर्माण वायव्य कोण में करना चाहिए। लोहे की चारपाई या अपने लोहे के बेड को पूर्व–दक्षिण में न बिछाएं, इससे धन हानि होगी और बीमारी का साथ होगा। इसलिए, लोहे की चारपाई को पश्चिम में बिछाएं और प्लाईवुड लगायें, इससे हानि नहीं होगी। गृह स्वामी को दक्षिण–पश्चिम के कमरे में सोना चाहिए।

शयनकक्ष का निर्माण अग्निकोण, ईशान कोण अथवा मध्य में नहीं करना चाहिए। अग्निकोण में शयनकक्ष होने से पारिवारिक जीवन कलहपूर्ण एवं अशान्त होता है तथा मुकदमें आदि जैसी परेशानियां भी झेलनी पड़ती हैं। जबकि ईशानकोण में शयनकक्ष होने पर आर्थिक रूप से हानि होती है तथा कार्यों में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होने से विलम्ब होता है। शयनकक्ष में बिस्तर या पलंग लगाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके उपर बीम अथवा शहतीर आदि नहीं आए।

शास्त्रों के अनुसार सोते समय सिरहाना पूर्व अथवा दक्षिण की ओर रखना शुभ फलदायक होता है, परन्तु पश्चिम

एवं उत्तर दिशा की ओर सिरहाना रखना अशुभ होता है। पूर्व की ओर सिर रखकर सोने से ज्ञान, बुद्धि एवं विद्या में वृद्धि होती है एवं दक्षिण की ओर सिर करके सोने से आयु लम्बी होती है। जबकि पश्चिम की ओर सिरहाना रखने से मानसिक तनाव एवं दुःख में वृद्धि होती है तथा उत्तर की ओर सोना मृत्यु को प्राप्त करने के बराबर होता है।

शयनकक्ष के बायें हाथ की तरफ पड़ने वाली खिड़कियों को ठीक हालत में रखें, इससे दाम्पत्य जीवन में तनाव कम होगा। शयन कक्ष के फर्श को चिकना रखें, इससे आपसी प्रेम बना रहेगा। जहां तक संभव हो सके, शयन कक्ष में बाहरी लोगों को न बैठायें, आपसी शक की संभावना अधिक होगी। शयन कक्ष के अंदर किसी भी तरह के जल के श्रोत की व्यवस्था नहीं करनी चाहिए, अन्यथा परिवार का कोई सदस्य बाहरी प्रेम–प्रसंग में फंस सकते हैं।

यदि विवाहित दंपत्ति के बीच कलह हो और शुरूआत पत्नी की तरफ से हो तो शयन कक्ष की दीवारों पर गुलाबी रंग का पेंट करना, सुन्दर पेंटिंग लगाना, हल्के गुलाबी रंग के पर्दे का प्रयोग करना, हल्के आवाज में संगीत की व्यवस्था करना तथा मनमोहक प्रकाश की व्यवस्था करना काफी लाभदायक होता है। यदि कलह की शुरूआत पति की तरफ से हो तो कमरे में लाल पेंट करायें। टी. वी. शयनकक्ष में न लगवायें। दीवारों पर तांबे के सजावट के सामान लगवाना, गुलाबी या लाल रंग के नाइट लैंप लगाना काफी लाभदायक होगा। यदि कोई संतान चिड़चिड़ी स्वभाव की है तो उसके लिए शयन कक्ष की व्यवस्था उत्तर–पश्चिम की दिशा वाले कमरे में करें।

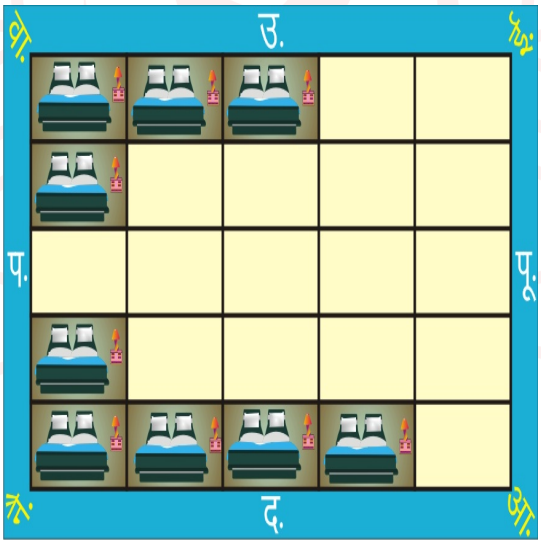

मकान में शयनकक्ष (बेडरूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार भोजन कक्ष के लिए सुझाव

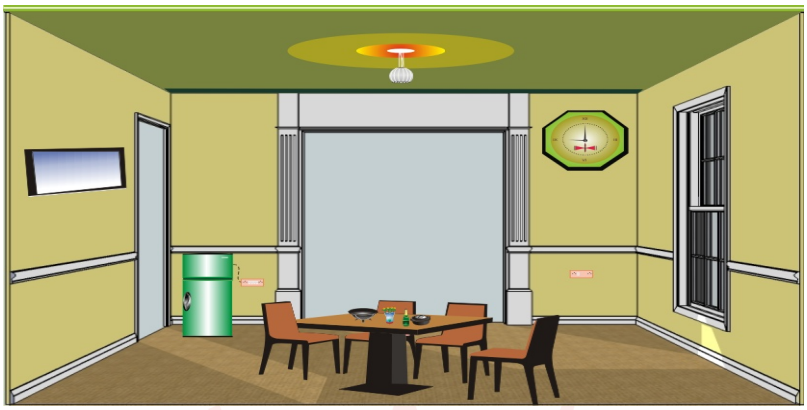

यदि रसोईघर में भोजन करने की व्यवस्था न करके उसके लिए पृथक भोजनालय की व्यवस्था करनी हो तो मकान के पश्चिम दिशा में भोजनकक्ष बनवाना चाहिए अथवा जिस कक्ष में भोजन करना हो उसके पश्चिम ओर ही डाइनिंग टेबल आदि रखना चाहिए। डाइनिंग टेबल का आकार गोलाकार अथवा अंडाकार की अपेक्षा वर्गाकार या आयताकार हो तो अधिक उपयुक्त होता है। भोजन के लिए बैठने की व्यवस्था ऐसी हो कि भोजन करते समय मुख पूर्व या उत्तर दिशा में रहे, न कि पश्चिम अथवा दक्षिण दिशा में।

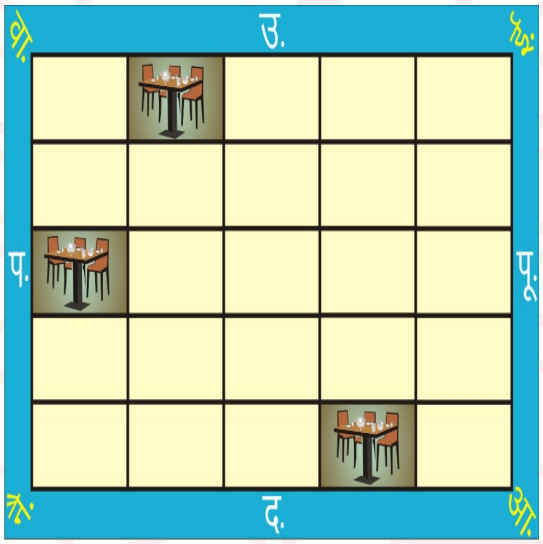

मकान में भोजन कक्ष (डाइनिंग रूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार अतिथि कक्ष के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में आने वाले अतिथियों के लिए कक्ष का निर्माण वायव्य कोण में करना चाहिए। अतिथि कक्ष में गद्दा बिछाकर मसनद लगाना या सोफा सेट लगाना ठीक रहता है। यदि गद्दे का प्रयोग करते हैं तो मसनद हमेशा दक्षिण या पश्चिम की ओर लगायें। यदि सोफा लगा रहे हैं तो इसे भी दक्षिण या पश्चिम की तरफ ही लगायें। उत्तर एवं पूर्व में खाली जगह छोड़नी चाहिए।

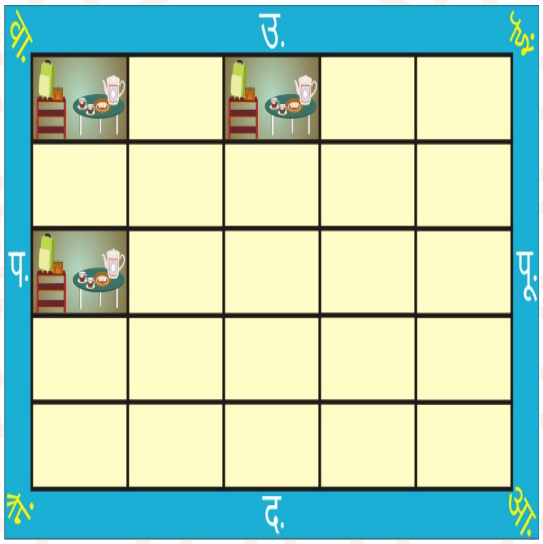

मकान में अतिथि कक्ष (गेस्ट रूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार अध्ययन कक्ष के लिए सुझाव

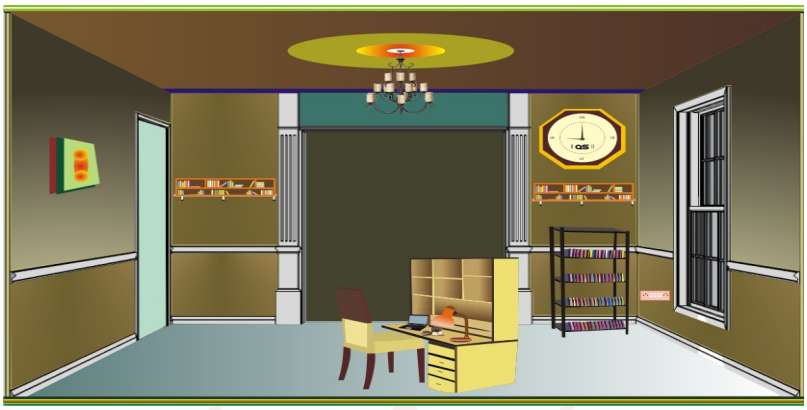

वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में आने वाले अतिथियों के लिए कक्ष का निर्माण वायव्य कोण में करना चाहिए। अतिथि कक्ष में गद्दा बिछाकर मसनद लगाना या सोफा सेट लगाना ठीक रहता है। यदि गद्दे का प्रयोग करते हैं तो मसनद हमेशा दक्षिण या पश्चिम की ओर लगायें। यदि सोफा लगा रहे हैं तो इसे भी दक्षिण या पश्चिम की तरफ ही लगायें। उत्तर एवं पूर्व में खाली जगह छोड़नी चाहिए।

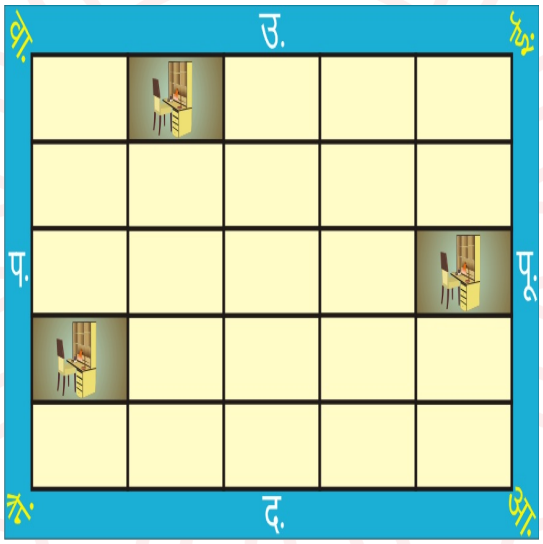

मकान में अध्ययन कक्ष (स्टडी रूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार शौचालय (टॉयलेट) के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, नैऋत्य एवं दक्षिण दिशा के मध्य के स्थान को शौचालय के लिए सर्वाधिक उचित माना गया है। अग्निकोण, ईशानकोण, पूर्व अथवा मकान के मध्य मे शौचालय का निर्माण कदापि नहीं करना चाहिए। यदि शयन कक्ष के साथ संलग्न शौचालय बनाना हो तो उस कक्ष के वायव्य कोण में बनाना अधिक अनुकूल होता है। शौचालय की बैठक को इस प्रकार लगाएं कि बैठते समय व्यक्ति का मुख उत्तर अथवा दक्षिण दिशा की ओर रहे। पूर्व दिशा की ओर बैठकर मल–मूत्र का त्याग करना अशुभ होता है।

बाहरी शौचालय को पूर्व या उत्तर में दीवार के सहारे न बनायें। यदि पूर्व या उत्तर में ही बनाना जरूरी हो तो चारदीवारी के सहारे न बनायें, बीच में कुछ जगह छोड़ दें तथा इसका फर्श मकान के फर्श से नीचा रखना चाहिए।

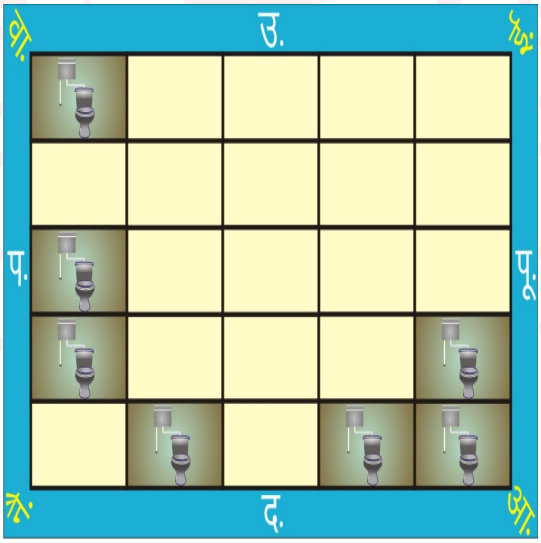

मकान में शौचालय (टॉयलेट) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार स्नानघर के लिए सुझाव

स्नानघर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त स्थान पूर्व की ओर माना जाता है, परन्तु उसके साथ शौचालय का निर्माण नहीं करना चाहिए। यदि पूर्व में शौचालय बनाना आवश्यक हो तो अग्निकोण में शौचालय का निमार्ण करके पूर्व दिशा में स्नानघर का निर्माण करना चाहिए। नैऋत्य, ईशान एवं मध्य में स्नानघर नहीं बनाना चाहिए। वाश बेसिन के लिए पूर्व, ईशान या उत्तर किसी भी दिशा की दीवार का चयन किया जा सकता है।

मकान के बाहर स्नानघर दक्षिण–पश्चिम में पश्चिम दिशा की पश्चिमी दीवार के सहारे बनायें या दक्षिण–पश्चिम में दक्षिण की ओर दक्षिणी दीवार के साथ बनायें। बाहरी स्नानघर को पूर्व या उत्तर में दीवार के सहारे न बनायें। यदि पूर्व या उत्तर में ही बनाना जरूरी हो तो चारदीवारी के सहारे न बनायें, बीच में कुछ जगह छोड़ दें तथा इसका फर्श मकान के फर्श से नीचा रखना चाहिए। जहां तक संभव हो सके, स्नानघर एवं शौचालय को अलग–अलग बनाना चाहिए।

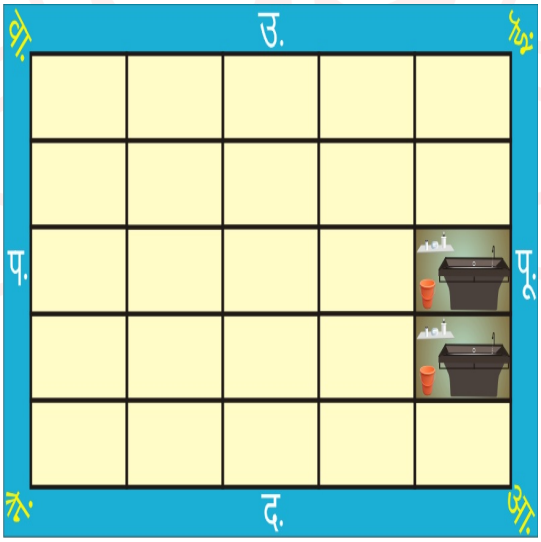

मकान में स्नानघर (बाथरूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल——किताब वास्तु के अनुसार बैठक (ड्रॉइंगरूम) के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, आवासीय मकान में बैठक के लिए पूर्व अथवा उत्तर दिशा को अधिक अनुकूल माना गया है, परन्तु मकान के मुख्य द्वार के अनुसार सुविधा के लिए अन्य दिशाओं में भी बैठक बनाया जा सकता है। बैठक की साज–सज्जा का ध्यान विशेष रूप से करना चाहिए। इस कक्ष में दीवारों पर हिसंक, वीभत्स एवं डरावने चित्र नहीं लगाने चाहिए, बल्कि सुन्दर एवं आकर्षक तस्वीरें लगानी चाहिए। इसी प्रकार इस कक्ष में कंटीली, नुकीली अथवा धारीदार वस्तुयें न रखकर सुगंधित एवं आकर्षक फूल आदि रखने चाहिए।

बैठक में फर्नीचर रखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भारी एवं बड़े आकार के फर्नीचर दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा की ओर हो एवं हल्के एवं छोटे आकार के फर्नीचर उत्तर एवं पूर्व दिशा की ओर हों। बैठने की व्यवस्था इस प्रकार से करनी चाहिए कि घर का मुखिया का स्थान बैठते समय दक्षिण अथवा पश्चिम की ओर हो एवं मुख उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर हो। हॉल में पानी बहने वाले चित्र न लगायें, आपका धन पानी की तरह खर्च होगा। लॉन या बैठक में कैक्ट्स का पौधा न लगायें, परिवार में तनाव बढ़ता है।

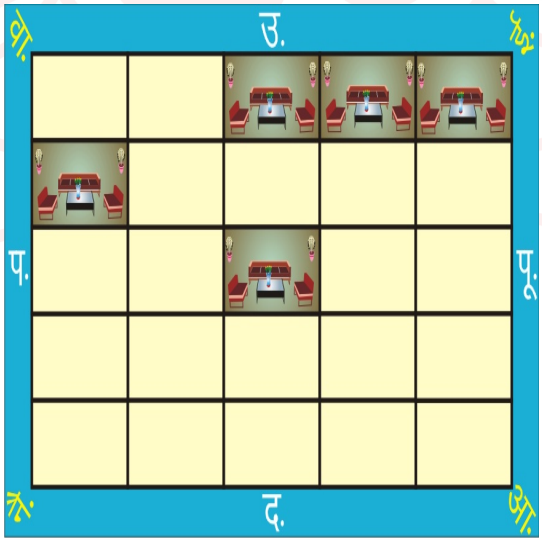

मकान में बैठक (ड्रॉइंगरूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार कोषागार (तिजोरी) के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, तिजोरी के लिए उत्तर दिशा का कमरा अधिक अनुकूल होता है। उत्तर दिशा के कमरे में दक्षिणी दीवार की ओर तिजोरी रखनी चाहिए एवं उसका मुख उत्तर की ओर रखना चाहिए। यदि तिजोरी दीवार में लगी हो अथवा आलमारी में हो तो उसमें कीमती वस्तुओं के लिए सबसे उपर के खाने में स्थान बनाना चाहिए। ईशान या वायव्य कोण में तिजोरी या बहुमूल्य वस्तुओं को नहीं रखना चाहिए। ईशानकोण में रखने पर धन का क्षय होता है एवं वायव्य कोण में रखने पर धन कभी भी घर में जमा निधि के रूप में नहीं रुकता है एवं आर्थिक हानि भी होती है।

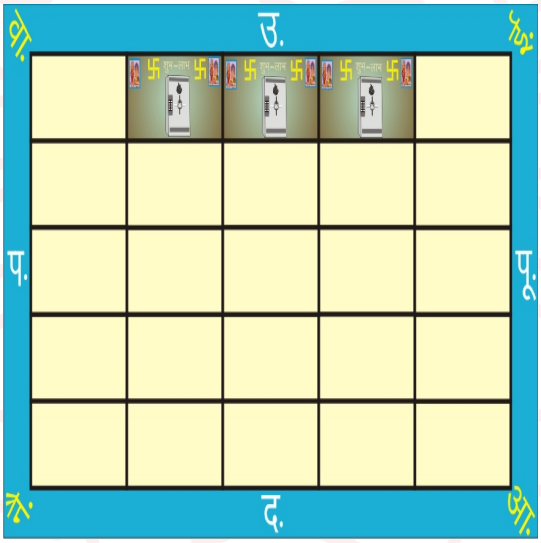

मकान में कोषागार (तिजोरी) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार तहखाना (बेसमेंट) के लिए सुझाव

अधिकांश वास्तुविदों के मतानुसार मकान में बेसमेंट का निर्माण नहीं करना चाहिए, परन्तु वर्तमान समय में भूमि की मांग एवं कीमतों में वृद्धि के फलस्वरूप मकान में बेसमेंट बनाने का प्रचलन अधिक हो गया है। अतः बेसमेंट बनाना यदि आवश्यक हो तो मकान के उत्तर एवं पूर्व दिशा में बेसमेंट बनाएं अथवा सम्पूर्ण मकान में ही बेसमेंट बनाएं। मकान के मात्र दक्षिण दिशा में अथवा पश्चिम दिशा में बेसमेंट कदापि नहीं बनाना चाहिए। व्यवसाय हेतु भी बेसमेंट पूर्व अथवा उत्तर दिशा में ही रखना शुभ साबित होता है।

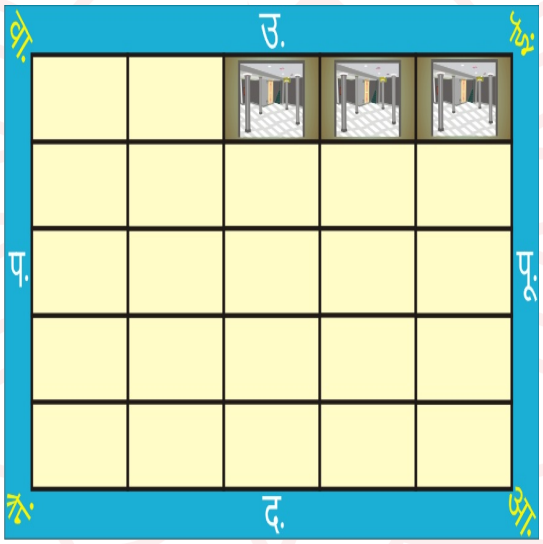

मकान में तहखाना (बेसमेंट) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार छत की पानी की टंकी के लिए सुझाव

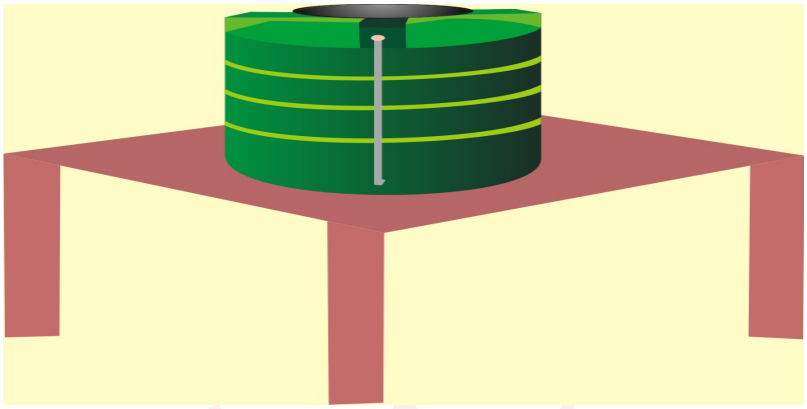

वास्तुशास्त्र के अनुसार छत पर बनाई जाने वाली पानी की टंकी के लिए नैऋत्य कोण अधिक उपयुक्त माना जाता है, परन्तु स्थानाभाव होने पर वायव्य कोण में भी पानी की टंकी लगाई जा सकती है, यदि टंकी वायव्य कोण में लगाना हो तो मकान के नैऋत्य कोण में एक ऐसा कमरा बनवाएं जिसकी उंचाई पानी की टंकी से अधिक हो। कभी भी पानी की टंकी उत्तर या ईशान कोण में नहीं बनानी चाहिए।

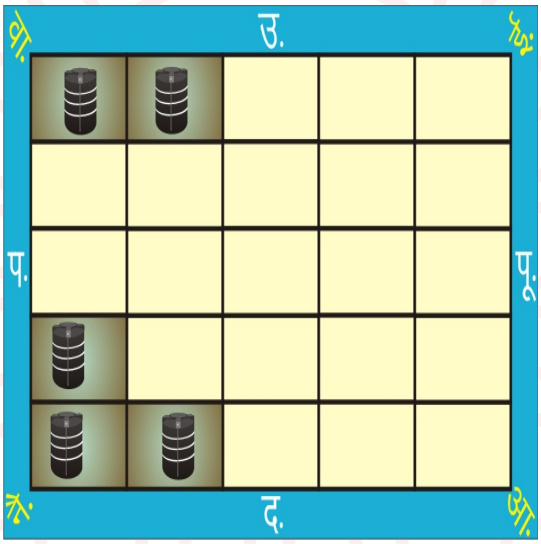

मकान में छत की पानी की टंकी के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार सीढ़ियों के लिए सुझाव

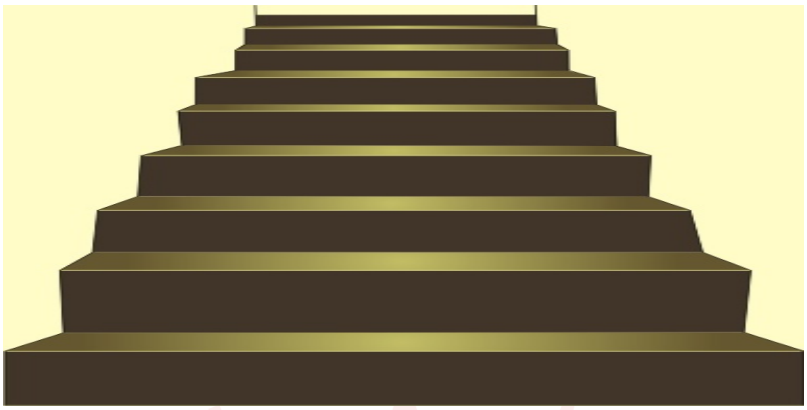

वास्तुशास्त्र के अनुसार सीढ़ियों के लिए सर्वाधिक उत्तम स्थान भवन के पीछे दक्षिण एवं पश्चिम दिशा को माना जाता है एवं सीढ़ियों का द्वार पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की ओर रखना शुभ होता है। यदि घुमावदार सीढ़ियों का निर्माण करवाना हो तो घड़ी की सुई के घूमने की दिशा के अनुसार, यानि दक्षिणावर्त, सीढ़ियों का घुमाव रखना चाहिए। मकान में वास्तुनुकूल बनाई गई सीढ़ियां सदैव शुभ फल प्रदान करती हैं।

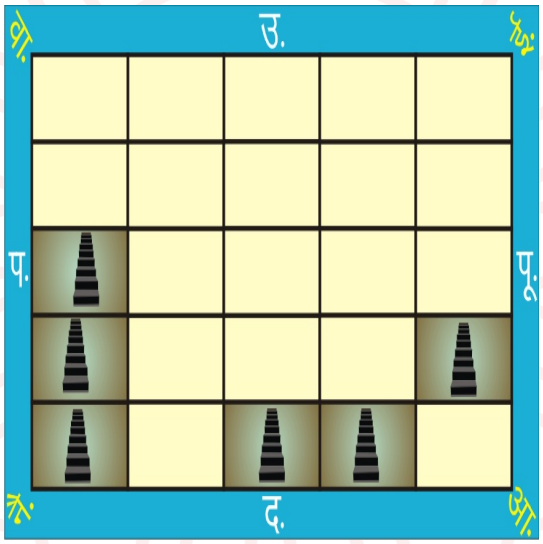

मकान में सीढ़ियों के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार खिड़कियों के लिए सुझाव

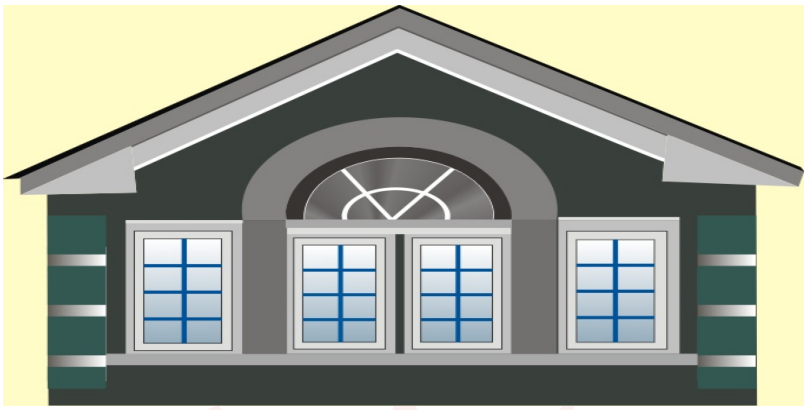

वास्तुशास्त्र के अनुसार मकान में खिड़कियों का निर्माण करवाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इनका निर्माण उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर अधिकाधिक हो, ताकि मकान में हवा एवं प्रकाश का आवागमन अधिकाधिक होता रहे। मकान में हवा एवं धूप के आने से पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है एवं रोगादि की संभावनाएं कम होती हैं, जिससे दवा एवं उपचार आदि पर होने वाले व्यय में कमी आती है। इसके विपरीत, यदि पश्चिम अथवा दक्षिण दिशा की ओर खिड़कियां एवं दरवाजे अधिक हों तो संभव होने पर उन्हें बन्द करवा देना चाहिए, अन्यथा उनपर मोटे पर्दे लगवा देना चाहिए। ऐसा करने से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर तो अनुकूल प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही साथ पीठ पीछे बुराई भी कम होती है।

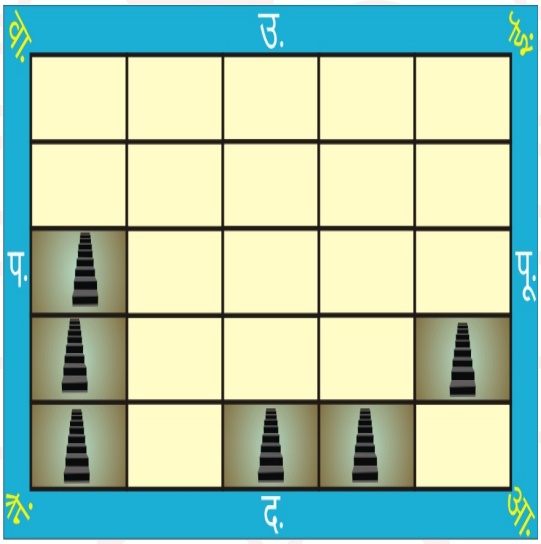

लाल––किताब वास्तु के अनुसार बालकनी (टैरेस) के लिए सुझाव

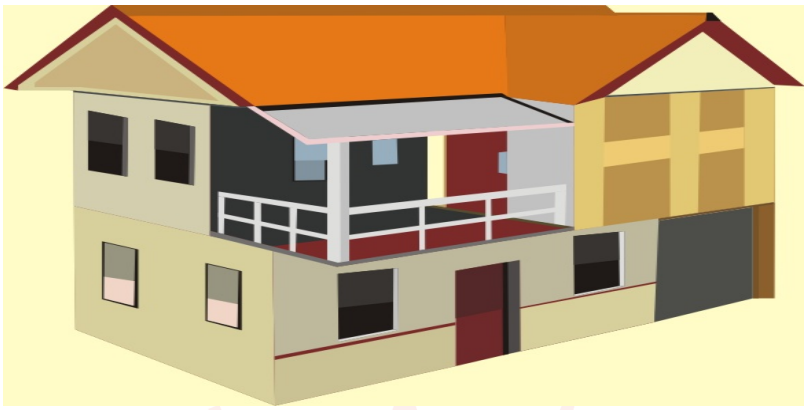

मकान में बालकनी का निर्माण करवाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इनका निर्माण उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर अधिकाधिक हो, ताकि मकान में हवा एवं प्रकाश का आवागमन अधिकाधिक होता रहे। मकान में हवा एवं धूप के आने से पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है एवं रोगादि की संभावनाएं कम होती हैं, जिससे दवा एवं उपचार आदि पर होने वाले व्यय में कमी आती है। बालकनी का स्थान भूखंड की दिशा पर निर्भर करता है। यदि पूर्वोन्मुखी भूखंड है तो बालकनी उत्तर–पूर्व में पूर्व की ओर बनाना चाहिए। उत्तरोन्मुखी भूखंड पर उत्तर–पूर्व में उत्तर की ओर, पश्चिमोन्मुखी भूखंड पर उत्तर–पश्चिम में पश्चिम की ओर तथा दक्षिणोन्मुखी भूखंड पर दक्षिण–पूर्व में दक्षिण की ओर बालकनी बनवायें।

लाल—किताब वास्तु के अनुसार बिजली के मीटर बोर्ड, मेन स्विच के लिए सुझाव

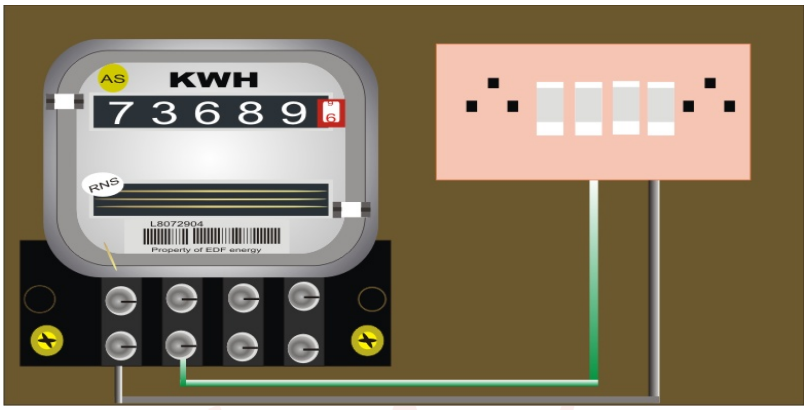

वास्तुशास्त्र के अनुसार,मकान में विद्युत से संबंधित उपकरण, मीटर बोर्ड, विद्युत कक्ष आदि की व्यवस्था अग्निकोण में करना सर्वाधिक उत्तम माना जाता है। अतः अग्निकोण में ही इन्हें लगवाना चाहिए।

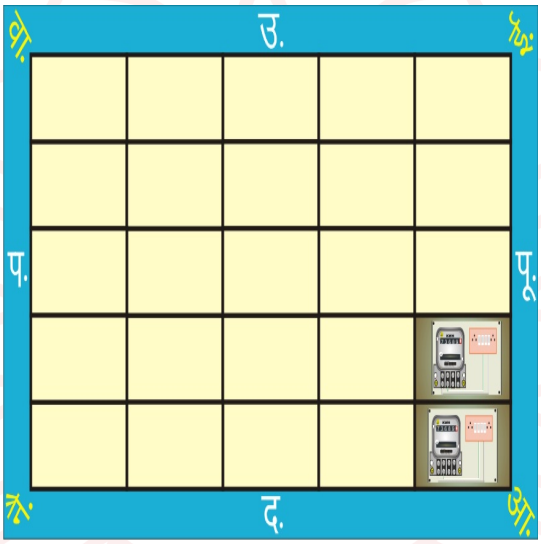

मकान में बिजली के मीटर बोर्ड, मेन स्विच के लिए उपयुक्त स्थान

लाल––किताब वास्तु के अनुसार गैराज (कार पार्किंग) के लिए सुझाव

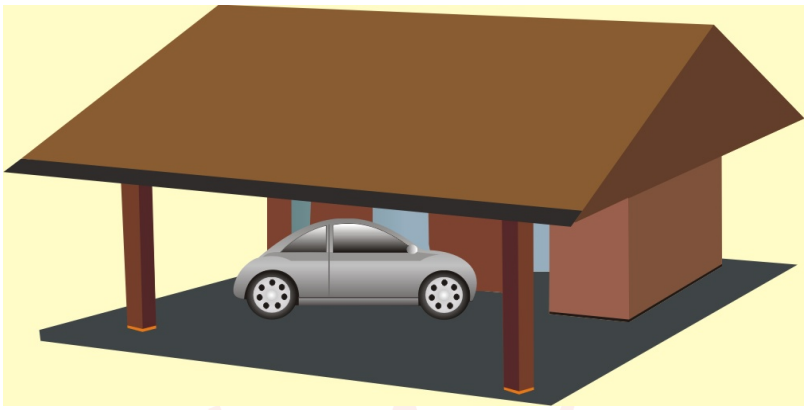

वाहन आदि की पार्किंग के लिए वास्तुविदों ने वायव्य कोण एवं उत्तर अथवा पूर्व दिशा को सर्वाधिक अनुकूल माना है। यदि पार्किंग स्थल पूर्व, उत्तर या वायव्य दिशा में बनाना संभव न हो एवं दक्षिण दिशा में बनाना आवश्यक हो तो आग्नेय कोण की ओर बनाना चाहिए। वाहन आदि की पार्किंग के लिए ईशान या नैऋत्य कोण अशुभ होता है इसलिए इस दिशा में पार्किंग बनाने से बचना चाहिए।

यदि भूखंड पूर्व या उत्तर–पूर्व है तो पोर्टिको उत्तर–पूर्व में पूर्व की ओर बनायें। उत्तर दिशा का भूखंड होने पर पोर्टिको उत्तर–पूर्व में उत्तर की ओर रखना चाहिए। उत्तर–पश्चिम भूखंड होने पर पोर्टिको पश्चिम में उत्तर–पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए। दक्षिण दिशा का भूखंड होने पर दक्षिण–पूर्व की ओर दक्षिण दिशा में पोर्टिको बनाना चाहिए। आग्नेय कोण के भूखंड में दक्षिण में दक्षिण–पूर्व की दिशा में पोर्टिको बनाना चाहिए। यदि भूखंड पूर्वोन्मूखी है, लेकिन मार्ग उत्तर–पूर्व में है तो पोर्टिको उत्तर में उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा में बनाना चाहिए।

गैरेज का स्थान सेवक निवास के नजदीक बनाना चाहिए। यदि भूखंड पूर्वोन्मूखी है तो दक्षिण–पूर्व दिशा में, उत्तरोन्मुखी है तो उत्तर–पश्चिम में उत्तर दिशा में और यदि दक्षिणोन्मुखी है तो दक्षिण–पश्चिम में पश्चिम की ओर बनाना चाहिए।

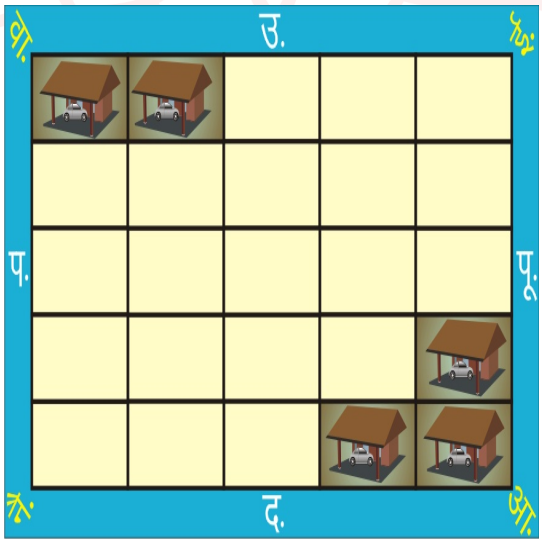

मकान में गैराज (कार पार्किंग) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल—किताब वास्तु के अनुसार सैप्टिक टैंक के लिए सुझाव

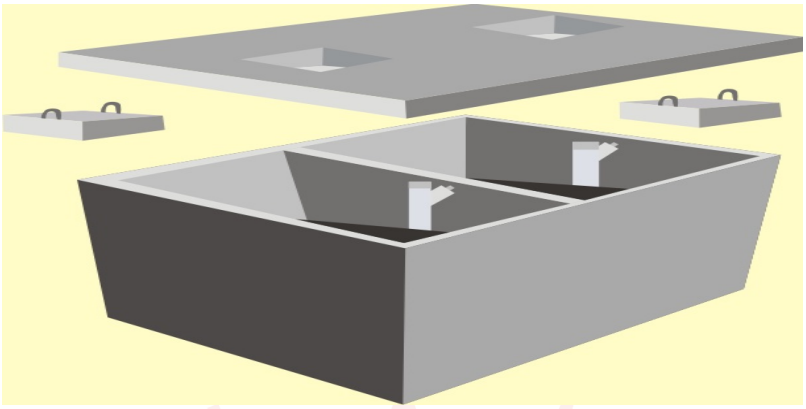

वास्तुशास्त्र के अनुसार, सैप्टिक टैंक के गड्ढे के लिए स्थान का चयन उत्तर, पश्चिम, वायव्य अथवा अग्निकोण के क्षेत्र से पूर्व दिशा की ओर करना चाहिए एवं साथ ही मकान में सैप्टिक टैंक बनाते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि यह घर की नींव, दीवार अथवा चाहरदीवारी से सटा हुआ ना हो एवं इनके बीच दो से पांच फीट तक का अन्तर रहे।

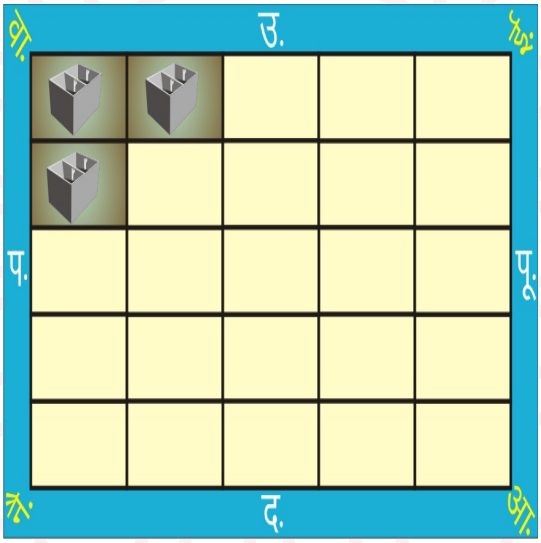

मकान में सैप्टिक टैंक के लिए उपयुक्त स्थान

लाल——किताब वास्तु के अनुसार कुंआ, बोरिंग व भूमिगत टैंक के लिए सुझाव

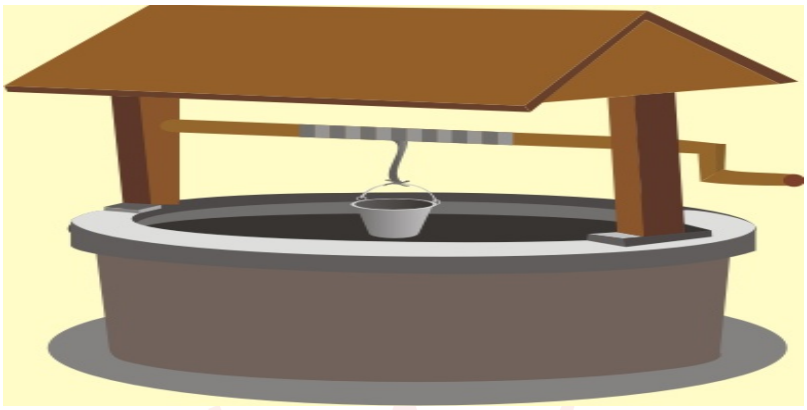

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमिगत जल के स्रोत जैसे कुंआ, ट्यूबवेल, नलकूप, बोरिंग अथवा भूमिगत टैंक के लिए पूर्व, पश्चिम, उत्तर अथवाईशान कोण को उपयुक्त माना गया है। भूमिगत जल के स्रोत इन्हीं दिशाओं में होने चाहिए। भवन के मध्य, नैऋत्य, वायव्य व अग्निकोण में किसी भी प्रकार का कोई भी भूमिगत जल का स्रोत कदापि नहीं बनाना चाहिए। इन दिशाओं में जल के स्रोत होने से घर–परिवार के सदस्यों में सदैव किसी प्रकार का भय व चिन्ता आदि बनी रहती है। यदि मकान के आस–पास उत्तर–पूर्व कोण में उत्तर की ओर कोई नदी या तालाब है तो मकान मालिक को काफी शुभ फल प्राप्त होगा। पश्चिम, पश्चिम–उत्तर में पश्चिम की ओर, दक्षिण, दक्षिण–पूर्व में दक्षिण की ओर तथा उत्तर–पश्चिम में नदी या तालाब होना शुभ फलदायक नहीं होता है।

मकान में नाली उचित स्थान पर लगाना चाहिए, अन्यथा पानी के ठहराव के कारण मकान में सीलन लग सकती है, जिसके फलस्वरूप मकान की दीवारें कमजोर होंगी। पानी के ठहराव के कारण परिवार के लोगों को कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

पूर्वोन्मुखी मकान में ड्रेनेज पाइप उत्तर–पूर्व में पूर्व दिशा की ओर, उत्तरोन्मुखी मकान में उत्तर में उत्तर–पूर्व की ओर, दक्षिणोन्मुखी मकान में दक्षिण–पूर्व में दक्षिण की ओर तथा पश्चिमोन्मुखी मकान में पश्चिम की ओर उत्तर–पश्चिम में ड्रेनेज पाइप लगवाना चाहिए।

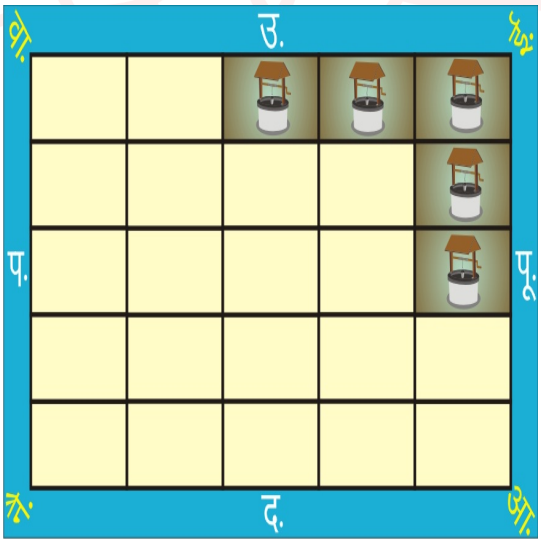

मकान में कुंआ, बोरिंग व भूमिगत टैंक के लिए उपयुक्त स्थान

ग्रहों से संबन्धित मकान का अनुमान

सूर्य का मकान

जिस मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में हो और धूप तथा प्रकाश समुचित रूप से मकान में आती हो या मकान से बाहर निकलते समय सूर्य पूर्व की ओर हो, बरामदा या आंगन मकान के बीचो–बीच हो, रसोईघर एवं बिजली के यन्त्र रेफ्रिजरेटर या अन्य घरेलू बिजली के उपकरण आस–पास हों, पानी के साधन, जैसे नल, टंकी इत्यादि मकान से निकलते समय दायें हाथ की तरफ बरामदे या आंगन में हो, ऐसे मकान पर सूर्य भगवान का आधिपत्य होता है। ऐसा मकान स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।

चन्द्रमा का मकान

जिस मकान पर चंद्रमा का आधिपत्य होगा, उस मकान के अंदर या मकान से कुछ ही दूरी पर पानी के साधन जैसे– पानी की टंकी, हैंडपम्प, बोरवेल, कुआं या तालाब निश्चित रूप से होगा। मकान में सफेद रंग का प्रयोग अधिक होगा। मकान का मुख्य द्वार पूर्व या ईशान में होगा। मकान में जल के स्रोत का उचित प्रबन्ध होगा। ऐसा मकान सुख एवं समृद्धि प्रदान करने वाला होता है।

मंगल का मकान

यदि कुण्डली में मंगल नेक है तो मकान का दरवाजा उत्तर या दक्षिण में होगा। मकान में सीमेन्ट का काम अधिक होगा। मकान में हवा, पानी के साधन ठीक–ठाक होंगे। यदि कुण्डली में मंगल बद है तो मकान का दरवाजा दक्षिणमुखी होगा। मकान पर किसी वृक्ष का साया पड़ सकता है। मकान के आस–पास श्मशान या कब्रिस्तान हो सकता है। मकान के आस–पास में बेकरी या हलवाई की दुकान या होटल होगा। मकान में रहने वाले लोग रोग से ग्रसित होंगे तथा संतान सुख में कमी महसूस करेंगे। कुछ संभावना है कि ऐसे मकान में रहने वाले निःसंतान हों। मकान में कोई भी चैन से नही रह पाएगा।

बुध का मकान

जिस मकान पर बुध का आधिपत्य होगा, उस मकान के चारो तरफ खुला भाग अधिक होगा। दूसरे मकान कुछ दूरी पर बने होंगे। मकान के आस–पास चौड़े पत्ते वाले पेड़–पौधे लगे होंगे, लेकिन पीपल या शहतूत के पेड़ होने की संभावना बहुत कम है।

बृहस्पति का मकान

जिस मकान पर बृहस्पति का आधिपत्य होगा, उस मकान में आंगन या बरामदा किसी कोने में होगा। बरामदा कभी भी बीच में नहीं होगा। मकान का दरवाजा उत्तर, दक्षिण या उत्तर–पूर्व दिशा में होगा। मकान के अंदर या आस–पास कोई मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा तथा बड़, पीपल या केले आदि का पेड़ होगा।

शुक्र का मकान

जिस मकान पर शुक्र का आधिपत्य होगा, उस मकान में कुछ भाग कच्चा जरूर होगा। मकान का दरवाजा उत्तर या दक्षिण दिशा में होगा। मकान के ड्योढ़ी का शहतीर उत्तर–दक्षिण दिशा में होगा। मकान में चूने एवं पलस्तर का काम अधिक होगा। फूल पत्ती वाले पौधे अधिक संख्या में लगे होंगे।

शनि का मकान

जिस मकान पर शनि का आधिपत्य होगा, उस मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में होगा। मकान की सबसे आखिरी कोठरी, जो मकान में प्रवेश करते समय दायें हाथ की तरफ होगी, वह अंधेरी कोठरी होगी। जब तक इस कोठरी में अंधेरा रहेगा, मकान में सुख एवं समृद्धि बना रहेगा। यदि भूल से भी उस अंधेरी कोठरी में रोशनी के लिए खिड़की खोली गई या रोशनदान बनाया गया या किसी अन्य तरीके से रोशनी का प्रबन्ध किया गया तो मकान में रहने वालों के लिए नुकसान दायक होगा। ऐसे मकान में उत्तम लकड़ी का प्रयोग नहीं होता है। आपके मकान में पत्थर गड़ा होगा। पुराने मकान के दरवाजे की दहलीज पुरानी लकड़ी जैसे शीशम, कीकर आदि की बनी होगी। मकान की छत पर पुरानी लकड़ी पड़ी होगी।

राहु का मकान

जिस मकान पर राहु का आधिपत्य होगा, उस मकान में बीमारियां अक्सर परेशान करती रहेंगी। मकान में आपसी झगड़े होते रहेंगे। मकान में प्रवेश करते ही दायें हाथ की ओर गढ्ढ़ा या नाली या कोई घड़ा पानी से भरा होगा। राहु की दशा खराब है तो छत को बार–बार बदलवाना पड़ेगा। घर में चारो तरफ धुआं–धुंआ होगा और गन्दे पानी का संग्रह होगा। मकान की दहलीज के नीचे से पानी निकलने की व्यवस्था होगी। सामने का पड़ोसी बेऔलाद होगा या वो घर उजड़ा होगा।

केतु का मकान

जिस मकान पर केतु का आधिपत्य होगा, वो मकान एक तरफ से या तीन तरफ से खुला होगा या मकान कोने का होगा। मकान में खिड़कियां अधिक संख्या में होंगी। मकान में दो तरफ से रास्ते होंगे। आस–पास कुत्तों का आना–जाना अधिक होगा। ऐसे मकान में पुत्र या पौत्र संतान की संख्या तीन से अधिक नहीं होगी। किसी पड़ोसी का मकान उजड़ा होगा।

आपका मकान और पंच तत्व

इस सृष्टि की रचना पांच तत्वों से हुई है – आकाश, अग्नि, वायु, जल एवं पृथ्वी। सृष्टि में जो भी रचना उपस्थित है, वो सभी इन्हीं पांच तत्वों से बनी है। इन पांचों तत्वों में सामंजस्य स्थापित करना बहुत जरूरी होता है, जिससे जीवन हर मामले में खुशहाल बना रहे।

आकाश

धरातल से लेकर अंतरिक्ष के बीच अनगिनित ग्रह, नक्षत्र, तारे आदि मौजूद हैं। ये सारा क्षेत्र आकाश कहलाता है। अपने मकान में आकाश तत्व को स्थापित करने के लिए खुला आंगन निश्चित रूप से रखना चाहिए। आंगन की लंबाई, चौड़ाई 3, 13, 8, 18 फीट पूरी नहीं होनी चाहिए। थोड़ा–बहुत कम–ज्यादा कर दें। आकाश तत्व की वृद्धि के लिए आकाश में तारों को देखें।

अग्नि

अग्नि से उष्मा एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। सूर्य की लाभदायक किरणें प्राप्त करने के लिए उत्तर एवं पूर्व में मकान खुला रखना चाहिए। उत्तर एवं पूर्व में ढलान रखें, ऊँचाई कम रखें तथा मकान के आगे घने एवं ऊँचे पेड़ न लगायें। सुबह की किरणों में विटामिन डी अधिक होता है, जो कि काफी लाभदायक होता है। शाम की किरणें हानिकारक होती हैं, अतः दक्षिण एवं पश्चिम में ऊँचा बनाना तथा पेड़–पौधे लगाना लाभदायक रहेगा। अग्नि तत्व की वृद्धि के लिए सूर्योदय के समय बाहर बैठकर सूर्य की किरणें अपने शरीर पर पड़ने दें।

वायु

पूरे वायुमंडल में हवा विद्यमान है। हवा के बिना जीवन की कल्पना नहीं हो सकती है। पूर्व की हवायें सौर ऊर्जा प्रदान करती हैं तथा उत्तर की हवायें शीतलता प्रदान करती हैं। पूर्वी एवं उत्तरी भाग में अधिक खुला रखना तथा दरवाजे एवं खिड़कियों का अधिक प्रयोग करना लाभदायक रहेगा। दक्षिण में खिड़की–दरवाजे कम रखें। दक्षिण–पश्चिम का भाग ऊँचा रखें तथा पूर्व–उत्तर का भाग नीचा होना चाहिए, इससे लाभदायक हवायें अधिक एवं हानिकारक हवायें मकान में कम मात्रा में आयेंगी। वायु तत्व की वृद्धि के लिए पेड़–पौधे के नजदीक गहरी सांस लें।

जल

जल हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। पर्याप्त एवं स्वच्छ जल के बिना जीवन प्रणाली रूक जाती है। मकान में जल संसाधन की व्यवस्था उत्तर ईशान पूर्व में करना लाभदायक होता है। बरसात के पानी की निकासी, कुआं, स्विमिंग पूल एवं स्नानागार उत्तर–पूर्व में बनाना शुभ होता है। गंदे पानी का निकास, सीवर एवं सेप्टिक टैंक उत्तर–पश्चिम में होना चाहिए। मध्य भाग में जल संसाधन होने से धन का नाश होता है। पूर्व में होने पर ऐश्वर्य नाश, दक्षिण में होने पर स्त्री को कष्ट होता है। इससे समुचित गुरूत्वीय संबंध स्थापित होता है। जल तत्व की वृद्धि के लिए पर्याप्त मात्रा में शुद्ध एवं स्वच्छ जल पियें।

पृथ्वी

पृथ्वी एक चुम्बक है, जो किसी भी चीज को अपने गुरूत्व बल से अपनी ओर खींचती है। वैदिक सिद्धांत के अनुसार, जो कुछ ब्रह्मांड में उपस्थित है, वो सारे तत्व हमारे शरीर में भी उपस्थित हैं। जिस तरह पृथ्वी के दो ध्रुव हैं, उसी तरह हमारे शरीर में भी दो ध्रुव हैं। उत्तरी ध्रुव सिर तथा दक्षिणी ध्रुव पैर होता है। मकान के

शयनकक्ष में सोने की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि सिर दक्षिण में एवं पैर उत्तर में हो। इससे नींद अच्छी आती है तथा रक्तचाप, मधुमेह आदि बीमारियों से बचाव होता है। पृथ्वी तत्व की वृद्धि के लिए नंगे पांव घास या फर्श पर चलें।

भूखण्डो का आकार

लाल किताब के अनुसार मकान बनवाने के लिए भूखण्ड का चयन बहुत ही सावधानी पूर्वक करना चाहिए। किस आकार का भूखण्ड आपके लिए लाभदायक होगा, इसका निर्णय मकान बनवाने से पूर्व कर लेना चाहिए।

आयताकार भूखण्ड

लाल किताब के अनुसार आयताकार भूमि को भी वास्तुविदों ने भवन निर्माण करने हेतु शुभ माना है। ऐसी भूमि पर निर्मित आवास में निवास करने पर घर में सदैव सुख–शांति बनी रहती है।

वर्गाकार भूखण्ड

लाल किताब के अनुसार भवन बनाने हेतु भूमि में वर्गाकार भूमि को सर्वोत्तम माना गया है। वर्गाकार भूखण्ड में निर्मित भवन में निवास करने पर भवन स्वामी एवं पारिवारिक सदस्य को सदैव सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

गोलाकार भूखण्ड

लाल किताब के अनुसार गोलाकार भूखण्ड भवन निर्माण करने के लिए अनुकूल होता है। गोलाकार भूमि पर निर्मित भवन में रहने वाले सभी सदस्यों का जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

त्रिकोणाकार भूखण्ड

लाल किताब के अनुसार त्रिकोणाकार भूखण्ड आवास के लिए अनुकूल नहीं होता है। ऐसी भूमि पर निर्मित आवास में निवास करने पर भवन स्वामी एवं पारिवारिक सदस्यों को किसी न किसी प्रकार के मानसिक तनाव से जूझना पड़ता है। मान–प्रतिष्ठा की हानि होने की संभावना बनी रहती है एवं राज्य से संबंधित तनाव भी झेलना पड़ता है। अतः ऐसे भूखण्ड पर किसी भी स्थिति में भवन नहीं बनाना चाहिए।

सिंहमुखी भूखण्ड

लाल किताब के अनुसार वह चतुर्भुजी भूखण्ड जो वर्गाकार या आयताकार ना होकर, आगे की ओर से चौड़ा होता

है एवं पीछे से संकरा अर्थात कम चौड़ा होता है। उसे सामान्यतः सिंहमुखी भूखण्ड कहा जाता है। ऐसा भूखण्ड आवासीय भवन हेतु शुभ नहीं होता है। ऐसे भवन में निवास करने पर व्यक्ति को जीवन में कभी भी सुख–शांति नहीं मिलती। सदैव किसी न किसी प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ता है। अपितु ऐसे भूखण्ड पर व्यवसाय हेतु भवन बनाना अधिक शुभ व लाभदायक होता है एवं काम–काज का विस्तार भी होता है।

गौमुखी भूखण्ड

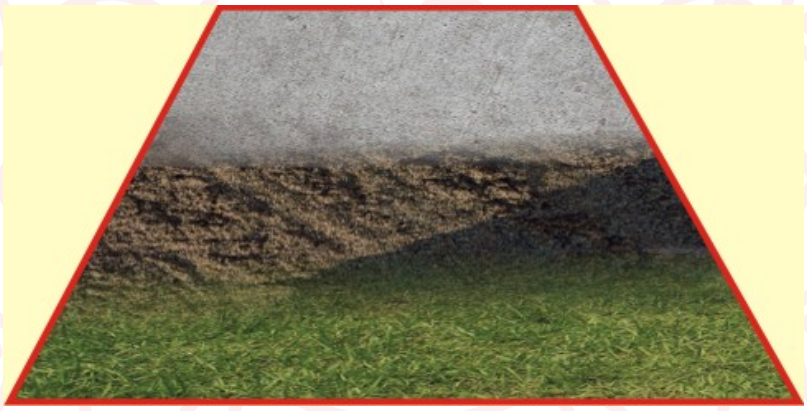

लाल किताब के अनुसार ऐसा चतुर्भुजी भूखण्ड जिसका सामने का भाग छोटा हो अर्थात कम चौड़ा हो एवं पीछे का भाग अधिक चौड़ा हो उसे गोमुखी भूखण्ड कहते हैं। ऐसे भूखण्ड पर आवास हेतु भवन का निर्माण किया जा सकता है। ऐसे भूखण्ड पर निर्मित भवन में सुख–शांति सदैव बनी रहती है। जबकि ऐसी भूमि पर व्यावसायिक कार्य हेतु निर्माण कदापि नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसे भूखण्ड के परिसर में किसी प्रकार का कामकाज सफल नहीं होता है।

अर्द्धवर्तुलाकार (अद्धचन्द्राकार) भूखण्ड

लाल किताब के अनुसार आकार के अनुसार अर्द्धवर्तुलाकार अर्थात आधा वृत्त की आकार के भूखण्ड को कई वास्तुविद आवासीय भवन बनाने के लिए अनुकूल नहीं मानते हैं। ऐसी भूमि भी निवास हेतु शुभ साबित नहीं होती है। ऐसी भूमि का त्याग कर देना ही उचित होता है।

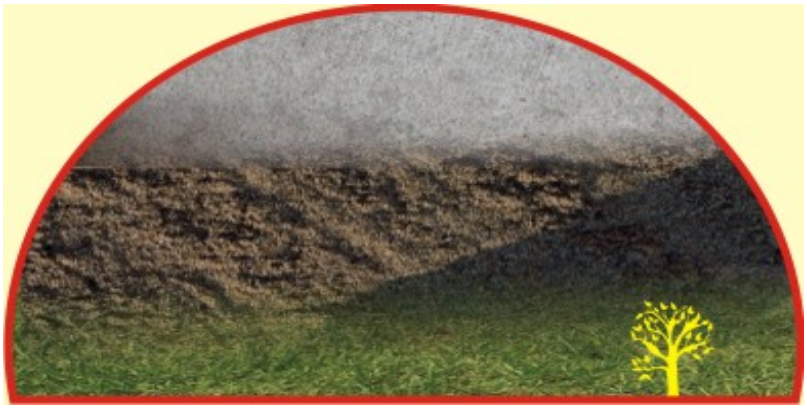

अण्डाकार भूखण्ड

लाल किताब के अनुसार अण्डाकार भूखण्ड पर धार्मिक कार्यो से संबंधित भवन के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार के भवन का निर्माण नहीं करना चाहिए। ऐसे भूखण्ड पर निर्मित घर में निवास करना शुभ नहीं होता है। यदि ऐसे भूखण्ड पर किसी मंदिर अथवा धार्मिक स्थल का निर्माण करवाया जाय तो वह शुभ फलदायक रहेगा।

वास्तुशास्त्र में दिशाओं का महत्व

उत्तर दिशा

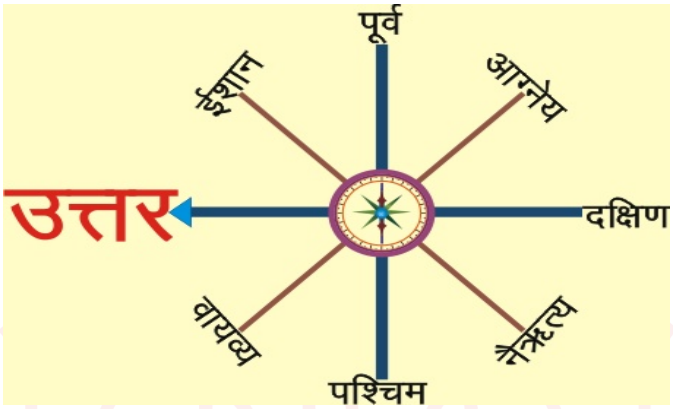

उत्तर दिशा का मालिक कुबेर को माना गया है। मकान के उत्तर दिशा की ओर की भूमि का स्तर नीचा होना चाहिए एवं निर्मित स्थान भी नीचे की तरफ होना चाहिए। वास्तु के अनुसार, उत्तर दिशा में बरामदा का निर्माण करना अधिक शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, इस दिशा में मुख्य द्वार, सीढ़ियां अथवा कीमती सामान जैसे जेवर, रूपए, पैसे आदि रखने हेतु स्थान बनाना भी शुभ होता है। इस दिशा में अधिक भार नहीं होना चाहिए तथा जितना अधिक खाली भाग होगा, उतना ही अधिक आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। उत्तर दिशा में कोई बड़ी इमारत या पहाड़ होना अशुभता को बढ़ायेगा। इस दिशा में हरे या सफेद रंग के शीशे या पर्दे लगाना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, उत्तर दिशा की ओर से घर और इस दिशा की बालकनी अथवा बरामदा आदि सभी नीची होनी चाहिए। इससे उसमें रहने वाली स्त्रियों पर शुभ प्रभाव पड़ता है एवं घर में धन लाभ भी अधिक होता है। मकान के उत्तर दिशा में खाली स्थान दक्षिण दिशा की तुलना में अधिक होना शुभ फलदायक होता है। इससे मकान मालिक एवं अन्य सदस्य ऐश्यवर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। मकान का मुख्य द्वार यदि उत्तर दिशा में ईशान की ओर हो तो यह अति शुभ फल प्रदान करता है। ऐसे मकान में अत्यंत बुद्धिमान एवं मेधावी बच्चों का जन्म होता है एवं घर की सुख–समृद्धि सदैव बनी रहती है। मकान में उपयोग किए गए जल का निकास उत्तर से होता हुआ ईशान कोण से बाहर निकालना शुभ होगा। इससे व्यवसायिक उन्नति होगी एवं आर्थिक सुदृढ़ता आएगी।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, उत्तर दिशा एवं मकान के उत्तरी भाग का उंचा होना उस मकान में निवास करने वाली स्त्रियों के लिए अशुभ होता है। ऐसे मकान की स्त्रियां सदैव किसी न किसी प्रकार के रोग से पीड़ित रहती हैं अथवा किसी लम्बी या स्थाई रोग का शिकार हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त धन हानि भी होती है। मकान के उत्तर दिशा में द्वार हो, जो वायव्य की ओर हो, तो उस मकान में चोरी एवं आगजनी से हानि होने की संभावना प्रबल होती है। मकान के उत्तर दिशा की ओर उंचे मकान या उंचे टीले नहीं होने चाहिए। इनके होने से सदैव

धन हानि होती रहती है। यदि मकान के परिसर में दक्षिण दिशा में खुला स्थान अधिक हो एवं उत्तर दिशा में खुला स्थान बिल्कुल न हो तो ऐसे मकान में अधिक समय तक बसेरा नहीं रहेगा अर्थात शीघ्र ही यह मकान उजड़ जाएगा।

दक्षिण दिशा

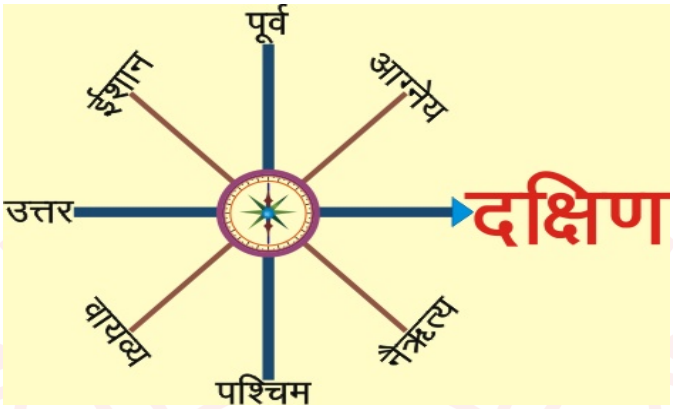

दक्षिण दिशा का स्वामी यम को माना गया है। मकान के दक्षिण दिशा की ओर शयन कक्ष का निर्माण करना चाहिए। इस दिशा की भूमि या मकान के निर्मित भाग को अन्य दिशाओं की अपेक्षा उंचा रखना चाहिए। दक्षिण दिशा के शीशे, पर्दे आदि काले रंग का रखना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, जिस भूखण्ड पर मकान का निर्माण करवाना हो, उससे लगती हुई सड़क यदि दक्षिण दिशा में हो तो मकान का निर्माण उसकी सीमा से सटकर करवाना शुभ फलदायक रहेगा। मकान के दक्षिण दिशा में निर्मित कमरों के भीतर भारी वस्तुओं को रखना शुभ होता है। दक्षिण दिशा में निर्मित कमरों को भी उत्तर दिशा में निर्मित कमरों से उंचा रखना शुभ फलदायक होता है। यदि संभव हो तो मकान के दक्षिणी भाग में उपयोग किए गए जल का निकास उत्तर दिशा से करना चाहिए। ऐसा करने से मकान में निवास करने वाली स्त्रियों के स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है एवं आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति सुदृढ़ होती है। आवसीय परिसर के दक्षिणी भाग को उत्तरी भाग से सदैव उंचा रखना चाहिए। ऐसा मकान में रहने वाले लोगों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से शुभ फल प्राप्त होता है एवं धन में भी वृद्धि होती है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि बालकनी दक्षिण दिशा में झुकी हुई बनाई गई हो, तो यह भी उस मकान के निवासियों के लिए अशुभ फल प्रदान करती है। मकान के दक्षिणी भाग की चारदीवारी यदि उत्तरी भाग की चारदीवारी से ऊँची हो तो यह बहुत अशुभ फल प्रदान करती है एवं मकान में रहने वालों के लिए बर्बादी का कारण बनती है। मकान के दक्षिणी भाग में जल स्रोत या कुआं का होना बहुत अशुभ होता है। इससे धन एवं जन की हानि की प्रबल संभावना रहती है। मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–आग्नेय की ओर नहीं होना चाहिए। इस दिशा में मुख्य द्वार होने पर चोरी, मुकदमा एवं अग्नि से हानि होने की संभावना अधिक होती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, मकान का मुख्य द्वार यदि दक्षिण दिशा में हो तो यह बहुत अशुभ होता है। मकान की दक्षिणी भूमि का

स्तर या फर्श उत्तरी भूमि के स्तर या फर्श से नीचा होना अशुभ फलदायक होता है। ऐसे मकान में निवास करने वाली स्त्रियों का स्वास्थ्य सदैव रोगजनित रहता है एवं मृत्युतुल्य कष्ट की प्रबल संभावना बनी रहती है।

पूर्व दिशा

पूर्व दिशा का मालिक इन्द्र को माना गया है। इसे पितृ भाग भी बोला जाता हैं। मकान में यह दिशा शुभ होने पर पुरूष संतान का सुख उत्तम होता है। वास्तु के अनुसार किसी भी मकान के पूर्व दिशा में कुआं, पानी का पम्प अथवा स्नानघर का निर्माण करवाना शुभ होता है। इस दिशा को छोटा करना या अधिक भार वाली वस्तुओं को रखना अथवा अधिक ऊँचा कर देना अशुभ मान जाता है, इसके फलस्वरूप वंश हानि या धन हानि हो सकती है। इस दिशा में पीले रंग का पर्दा लगाना शुभ रहता है।

यदि पूर्वाभिमुख मकान का मुख्य द्वार बाहर सड़क पर से दिखाई देता है, तो यह वास्तुशास्त्र के अनुसार शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, मकान के पूर्व दिशा की ओर जो भी कक्ष बनाया जाए उसके पूर्वी भाग को नीचा रखना चाहिए। ऐसा करने से मकान मालिक एवं उनके पारिवारिक सदस्य शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ एवं निरोग रहते हैं। यदि किसी को कोई रोग आदि भी होता है, तो वह शीघ्र ही निरोगी हो जाता है। वास्तु के अनुसार, पूर्व दिशा की ओर की बाहरी दीवार पश्चिम दिशा की ओर की दीवार से कम उंची होनी चाहिए। ऐसा करना वंश एवं धन की वृद्धि के लिए शुभ होता है और ऐसे मकान में उत्पन्न होने वाली संतान अपने जीवन में बहुत उन्नति करती है। यदि संभव हो तो पूर्व दिशा की ओर मकान का मुख्य द्वार रखना चाहिए। पूर्वाभिमुख द्वार वाला मकान सभी प्रकार की सुख–शांति एवं सुविधापूर्ण जीवन प्रदान करने वाला होता है। पूर्व दिशा की ओर यदि कुआं अथवा जल के स्रोत की व्यवस्था की जाए तो इससे पारिवारिक सदस्यों की सुख–शांति एवं उन्नति में लाभ होता है। मकान के पूर्व दिशा की ओर यदि संभव हो तो अन्य दिशाओं की अपेक्षा अधिक खुला एवं खाली स्थान रखना चाहिए, इससे वंश एवं धन में कभी कोई कमी नहीं आती है एवं सदैव घर इनसे भरा–पूरा रहता है। यदि संभव हो तो उपयोग किए हुए जल का निकास पूर्व दिशा की ओर से बाहर निकालने की व्यवस्था करनी चाहिए। पूर्व दिशा से जल का निकास होने से घर की सुख–शांति सदैव बनी रहती है।

यदि मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में आग्नेय–पूर्व की ओर अधिक सटकर होगा तो इससे मकान मालिक के मुकदमे आदि में फंसने की संभावना अधिक होगी एवं चोरी आदि का भय भी अधिक रहेगा। यदि मकान के पूर्व दिशा की ओर किसी प्रकार का कोई छोटा–सा भी खुला या खाली स्थान न हो तो ऐसे मकान में रहने वालों को सिरदर्द, पक्षाघात एवं नेत्र रोग अथवा किसी अन्य प्रकार के रोग से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है। मकान के पूर्व में यदि खुला स्थान हो तो वहां पर किसी प्रकार की गंदगी या कूड़ा नहीं डालना चाहिए। क्योंकि इस खाली भाग में गंदगी रखना धन एवं पुत्र के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि मकान के पूर्वी भाग से पश्चिमी भाग नीचा हो तो ऐसे मकान में धन की कमी सदैव बनी रहती है तथा ऐसे मकान में उत्पन्न बच्चों का मानसिक विकास भी ठीक ढंग से नहीं होता है, जिससे उनकी उन्नति के अवसर में बाधा आती है।

पश्चिम दिशा

पश्चिम दिशा का मालिक वरूण को माना गया है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मकान के पश्चिम दिशा में सीढ़ियां अथवा बाग–बगीचे की व्यवस्था करना अधिक शुभ होता है, परन्तु कुछ वास्तुविद इस दिशा में भोजन का स्थान बनाना भी उचित मानते हैं। इनके अतिरिक्त, पश्चिम दिशा में जल का स्रोत भी रखा जा सकता है। पश्चिम दिशा में भूमि का स्तर अथवा निर्मित भाग का स्तर उंचा रखना चाहिए। पश्चिम दिशा में दरवाजे–खिड़कियां कम रखनी चाहिए तथा सफेद शीशे या पर्दे का प्रयोग करना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, भूखण्ड के पश्चिम दिशा की ओर की भूमि का स्तर अथवा मकान का फर्श सदैव इसके उत्तर–पूर्व के फर्श से उंचा होना चाहिए। यह मकान मालिक तथा उसके पारिवारिक जनों के लिए शुभ फलदायक होता है। यदि मकान का मुख्य द्वार एवं अन्य द्वार मात्र पश्चिममुखी हो तो वास्तु शास्त्र के अनुसार यह शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। यदि पश्चिम दिशा की ओर बड़े–बड़े पत्थर अथवा पेड़ स्थित हैं तो इससे भी मकान में निवास करने वालों को शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। मकान की पश्चिम दिशा की ओर की दीवार को पूर्व दिशा की ओर की दीवार से उंचा रखना चाहिए। इससे मकान की शुभता में वृद्धि होती है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, पश्चिम दिशा में स्थित खाली स्थान कभी भी पूर्व दिशा की तुलना में नीचा नहीं होना

चाहिए। यह मकान की अशुभता में वृद्धि करता है। यदि मकान के पश्चिम दिशा में स्थित दरवाजा वायव्य की ओर हो तो इससे पारिवारिक जनों को कोर्ट–कचहरी एवं मुकदमें में बेवजह फंसना पड़ता है एवं अर्थिक दृष्टि से हानि भी सहन करनी पड़ती है। मकान में उपयोग किए गए जल का निकास पश्चिम दिशा से नहीं करना चाहिए। इस दिशा से जल का निकास करने पर मकान में निवास करने वालों को गंभीर रोग से पीड़ित रहने की संभावना अधिक होती है। यदि मकान के पश्चिम दिशा में पूर्व दिशा की तुलना में खुला भाग अधिक हो तो यह अधिक अशुभ होता है। इससे वंश का नाश होता है। यदि मकान के पश्चिम में स्थित दरवाजा नैऋत्य दिशा की ओर हो तो इससे पारिवारिक जनों को गंभीर रोग, अकाल मृत्यु एवं धन हानि जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

नैऋत्य दिशा

नैऋत्य दिशा दक्षिण एवं पश्चिम दिशाओं का मिला हुआ भाग है। आवास हेतु निर्मित मकान के नैऋत्य कोण में शौचालय अथवा अनुपयोगी एवं भारी वस्तुओं के रखने हेतु व्यवस्था करना अधिक अनुकूल होता है। वास्तुविदों के अनुसार, इस दिशा की भूमि अथवा मकान का निर्मित भाग उंचा होना चाहिए, इससे शत्रुओं से रक्षा होती है। इस दिशा में शस्त्र रखना एवं नीले या काले पर्दे या शीशे लगाना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, नैऋत्य कोण के भूमि का स्तर अथवा निर्मित भाग का स्तर भी उंचा रखना चाहिए। इस स्थान में बड़े–बड़े पेड़ लगाने चाहिए। इससे धन, भाग्य, सुख एवं संपदा में वृद्धि होती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, नैऋत्य कोण में सीढ़ियों का निर्माण करवाना भी मकान की शुभता में वृद्धि करता है। आवास हेतु निर्मित मकान के नैऋत्य कोण में शयन कक्ष होना चाहिए, इससे मकान में रहने वालों को शुभ फल प्राप्त होता है। भूखण्ड के नैऋत्य कोण में यदि कोई मिट्टी का टीला पहले से मौजूद हो तो उसे वहां से हटाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इस स्थान पर स्वनिर्मित टीले मकान वासियों के लिए शुभ फल प्रदान करने वाले होते हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, नैऋत्य कोण में वृद्धि अशुभ होती है। इसके बढ़ने से शत्रुओं की वृद्धि होती है एवं शत्रु हावी होते हैं। पारिवारिक जनों को कोर्ट–कचहरी आदि के कारण ऋण भी लेना पड़ता है। नैऋत्य कोण में पानी का भूमिगत टैंक कदापि नहीं होना चाहिए। यह बहुत अशुभ होता है। इससे दुःखद परिस्थितियों एवं बर्बादी का

सामना करना पड़ता है। नैऋत्य कोण की वृद्धि पश्चिम या दक्षिण किसी भी दिशा में करना अशुभ होता है। दक्षिण की ओर नैऋत्य कोण की वृद्धि होने पर परिवार की स्त्रियों को परेशानी होती है एवं पश्चिम दिशा की ओर वृद्धि होने पर पुरुषों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। नैऋत्य कोण में मकान अथवा उसकी चारदीवारी का द्वार होना अशुभ माना जाता है। इससे मकान में रहने वालों को भंयकर बीमारियों का शिकार होना पड़ता है एवं मृत्युतुल्य कष्ट की संभावना भी प्रबल हो जाती है। इसके अतिरिक्त, अकारण अपयश, जेल, कचहरी, मुकदमा एवं दुर्घटना आदि के कारण भी परेशानियां होती हैं। नैऋत्य कोण में कुआं भी नहीं होना चाहिए। इससे मकान में रोगियों की संख्या में वृद्धि होती है एवं रोग आसानी से ठीक नहीं होते हैं। पारिवारिक जनों को मानसिक रूप से भी परेशान होने से हत्या एवं आत्महत्या की संभावना भी अधिक बढ़ जाती है। मकान के नैऋत्य दिशा में बने कमरे में इस ओर कोई खिड़की नहीं बनानी चाहिए। इससे मकान की अशुभता में वृद्धि होती है।

आग्नेय दिशा

आग्नेय दिशा का मालिक अग्नि देव को माना गया है। चूँकि यह दो दिशाओं पूर्व एवं दक्षिण दिशा का मिलन है, इसलिए यहां यम और इन्द्र का भी प्रभाव होता है और दो दिशाओं के मिलने से यहां उर्जा एवं शक्ति का प्रभाव ज्यादा होता है। पंच शिलान्यास के समय प्रथम दिशा की स्थापना इसी दिशा में की जाती है। इस दिशा में चूल्हा या अन्य आग्नेय यंत्र रखना ठीक रहता है। इस दिशा में लाल रंग का पर्दा लगाना ठीक रहता है। इस दिशा में किसी प्रकार का जल स्रोत या कुआं आदि नहीं बनाना चाहिए।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, अग्निकोण में शौचालय का निर्माण करवाना शुभ फलदायक होता है, परन्तु इस कोण में सैप्टिक टैंक का निर्माण नहीं करवाना चाहिए। सैप्टिक टैंक का निर्माण वायव्य कोण में करवाना उचित होगा। मकान में उपयोग किए हुए जल की निकासी का प्रबंध अग्निकोण से नहीं होना चाहिए, इससे सुख–शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होती है। पूर्व दिशा की ओर रखे गए खाली स्थान का अनुकूल प्रभाव अग्निकोण के शुभ प्रभावों में वृद्धि करता है। अग्निकोण में पाकशाला अर्थात रसोईघर का निर्माण करना सर्वोत्तम होता है। मकान के अग्नि कोण वाले भाग को नीचा रखना उसमें निवास करने वालों के लिए शुभ फलदायक होता है।

वास्तु शास्त्र के अनुसार, मकान का अग्निकोण का भाग उंचा होने पर एवं नैऋत्य एवं वायव्य का भाग नीचा होने पर वंश का नाश होता है और अपयश का भागी बनना पड़ता है। यदि मकान का मुख्य द्वार दक्षिण या नैऋत्य कोण में स्थित हो तो अग्निकोण की अशुभता में वृद्धि होगी तथा मकान के उत्तर–पूर्व दिशा की ओर यदि कोई खाली स्थान न हो तो भी अग्नि कोण मकान मालिक एवं उसके निवासियों के लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला साबित होगा। इससे घर में आगजनी, चोरी, मुकदमें, झगड़े आदि में वृद्धि होगी। अग्नि कोण में जल का स्रोत एवं किसी प्रकार का गड्ढा आदि कदापि नहीं होना चाहिए। इससे अग्नि से दुर्घटना आदि का भय होता है। यदि अग्निकोण और दक्षिण दिशा का भाग नीचा हो एवं ईशान कोण और उत्तर दिशा की ओर का भाग उंचा हो तो मकान मालिक को सदैव आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ेगा अर्थात दरिद्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ेगा।

वायव्य दिशा

वायव्य दिशा पश्चिम एवं उत्तर दिशाओं का मिलन स्थान है। इस दिशा के मालिक वायु को माना गया है। वायव्य कोण शुभ होने से मित्रों की संख्या अधिक होगी। वास्तुशास्त्र के अनुसार, वायव्य कोण में अन्न के भंडारण हेतु व्यवस्था करना अधिक शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, इस दिशा में शौचालय या पशुओं के रखने हेतु व्यवस्था भी की जा सकती है। वायव्य कोण में भूमि का स्तर ऊँचा रखना चाहिए। वायव्य कोण में शीशे एवं पर्दे हरे रंग का लगाना लाभदायक होता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, वायव्य कोण को ईशान से उंचा रखना चाहिए एवं आग्नेय एवं नैऋत्य से नीचा रखना चाहिए। यह पारिवारिक जनों के लिए शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि भूखण्ड से वायव्य कोण प्राकृतिक रूप से कटा हुआ या लुप्त हो तो यह शुभ होता है। मकान के वायव्य कोण में कुआं अथवा कोई गड्ढा न होना मकान की शुभता में वृद्धि करता है। यदि मकान का मुख्य द्वार पश्चिमी वायव्य की ओर हो तो यह अनुकूल फल प्रदान करता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, भूखण्ड अथवा मकान के वायव्य कोण में बड़े–बड़े गड्ढे हो एवं वायव्य कोण ईशान कोण की तुलना में नीचा हो, तो ऐसे मकान में निवास करने वालों को रोग एवं कोर्ट–कचहरी आदि से जूझना पड़ता है। यदि मकान के वायव्य कोण में किसी प्रकार का कोई भी दोष होगा, तो इस बात की प्रबल संभावना रहेगी

कि उस मकान की नीलामी तक की नौबत आ जाए। वायव्य कोण में रसोईघर का निर्माण नहीं करना चाहिए। इस स्थान पर पाकशाला होने पर मकान में अतिथियों का आगमन अधिक होता है, जिसके फलस्वरूप घरेलू खर्च में वृद्धि होती है। मकान का वायव्य कोण बढ़ा हुआ होने पर पारिवारिक जनों में से किसी को भी मानसिक रूप से रोगग्रस्त रहने की प्रबल संभावना होती है।

ईशान दिशा

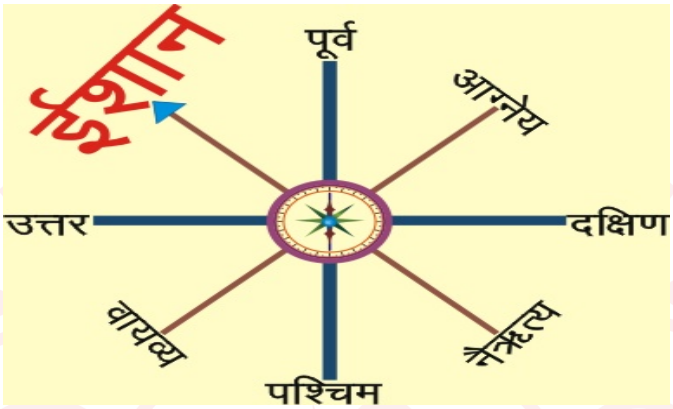

ईशान दिशा का मालिक शिव को माना गया है। पूर्व की ही तरह ईशान कोण की भूमि का स्तर अथवा मकान का हिस्सा भी नीचा होना चाहिए। इस दिशा में पूजा घर बनाना चाहिए अथवा कुआं, जल स्रोत अथवा बाग–बगीचा लगाना भी शुभ होता है, इससे धन एवं संतान में वृद्धि होती है। ईशान कोण में ज्यादा भार नहीं होना चाहिए। ईशान कोण में शीशे या पर्दे सफेद या काले रंग का लगाना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, ईशान कोण का बढ़ा हुआ होना शुभ फलदायक होता है। यदि ईशान कोण पूर्व की ओर बढ़ा हुआ होगा तो मकान मालिक एवं उसमें निवास करने वाले सभी लोग सज्जन, व्यवहारिक एवं धार्मिक होंगे तथा आर्थिक रूप से भी समृद्ध जीवन व्यतीत करेंगे।यदि ईशान कोण नीचा हो अथवा इस दिशा में गड्ढे आदि हों तो भी यह शुभ फलदायक होता है। ऐसे मकान में निवास करने पर सभी प्रकार की सुख–सुविधायें एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन प्राप्त होता है। मकान में उपयोग किए जल अथवा वर्षा आदि किसी भी प्रकार के जल की निकासी ईशान कोण से करना अधिक शुभ होता है। ऐसे मकान में निवास करने पर व्यक्ति को संतान की कभी कमी नहीं होगी एवं वह सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करेगा। ईशान कोण में कुआं, ट्यूबवेल, हैंडपंप या अन्य पानी के स्रोत होने पर भी मकान की शुभता में वृद्धि होती है। मकान में निवास करने वाले व्यक्तियों को धन–संपदा की भरपूर प्राप्ति होती है।

ईशान कोण की उत्तरी दिशा में यदि उसकी लम्बाई पूर्व से कुछ कम हो एवं उत्तर दिशा में कोई उंची इमारत हो तो ऐसे मकान में निवास करने वाली स्त्रियों को बीमारी आदि से पीड़ित रहना पड़ता है एवं मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्त होने की भी प्रबल संभावना रहती है। इसके अतिरिक्त आर्थिक तंगी भी झेलनी पड़ती है। ईशान कोण में बनी चारदीवारी उत्तर–पूर्व से कदापि उंचा नहीं होना चाहिए। यह मकान मालिक एवं पारिवारिक सदस्यों के लिए

अशुभ फल प्रदान करता है। मकान के ईशान कोण में किसी प्रकार का कूड़ा–कचड़ा आदि नहीं डालना चाहिए। इस स्थान में गंदगी फैलाने पर मकान में रहने वालों का चरित्र संदिग्ध बना रहता है। ईशान दिशा में रसोईघर भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे घर में कलह होती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि ईशान कोण किसी इमारत या टीले आदि के कारण बंद हो और नैऋत्य कोण में गड्ढे बने हुए हों तो यह बहुत अशुभ होता है। ऐसा भूखण्ड अथवा मकान सुख–समृद्धि, धन, यश आदि को बर्बाद करने वाला होता है।